मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

आख़िरी नबी

(सल्लल्लाहु अलैहि वस्सलम)

"आप (स०अ०) की सम्पूर्ण पैरवी से हर युग में और लगभग हर जगह ऐसे मनुष्य पैदा होते रहे जिनसे आप (स०अ०) की याद ताज़ा होती थी और नबियों की शान नज़र आती थी, जिनको देखकर लगता था कि अल्लाह का काम बन्द नहीं हुआ, अल्लाह का दीन ज़िन्दा है, रसूलुल्लाह (स०अ०) की पैरवी हर ज़माने में संभव है और उन्हीं के कारण आख़िरी नबी स०अ० के बाद किसी नबी की वजूद की ज़रूरत नहीं।"

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

OCT 2015

₹10/-

तीनों ख़लीफ़ा की ख़िलाफ़त का क्रम

अल्लाह के सामर्थ्य व तत्वदर्शिता का प्रदर्शन

"आप इस नायब होने की व्यवस्था को देखें जो "ख़िलाफ़त–ए–राशिदा"(रसूलुल्लाह स०अ० के बाद के चार शासक) के नाम से मशहूर है कि आप स०अ० के दुनिया से सफ़र करने के बाद जो शख़्सियतें शासक के पद पर बैठीं हैं और फिर जिस क्रम के साथ ख़िलाफ़त के पद पर आसीन हुईं और अल्लाह तआला ने ख़िलाफ़त के फ़र्ज़ को अदा करने का जो मौक़ा उनको अता फ़रमाया, यह बिल्कुल "ज़ालिका तक़दीरुल अज़ीज़िल अलीम" का प्रदर्शन है। इस सिलसिले को अल्लाह तआला ने ऐसे क्रम और ऐसी व्यवस्था के साथ चलाया कि वह उसकी रहमत, उसकी हिकमत (तत्वदर्शिता) और उसकी ताक़त की एक मिसाल है।

दुनिया के दीन व धर्मों और क़ौमों व इतिहास के परिदृश्य पर नज़र रखने वाले चिन्तक अगर कहीं एकत्र हों और उनको इसका पूरा अधिकार दे दिया जाए कि वे अपने इतिहास के अनुभव और दीन व धर्मों और कौमों के उत्थान व पतन के अध्ययन की मदद से उससे बेहतर क्रम बनाएं तो मैं यक़ीन के साथ कहता हूं कि इतिहास और ऐतिहासिक परिदृश्य का एक छात्र और विशेषतय: उन धर्मों के इतिहास का अध्ययन करने वाले व्यक्ति होने की हैसियत से पूरे दावे के साथ कहता हूं कि वे इससे बेहतर क्रम सोच नहीं सकते और इससे बेहतर ख़्याल भी नहीं कर सकते। अक्सर ऐसा हुआ है कि कोई ज़माना गुज़र गया या मुल्क व सुल्तान का कोई सिलसिला पूरा हो चुका है। हुकूमत का कोई सिलसिला या शाही ख़ानदान अपनी समय सीमा ख़त्म कर चुका है। बाद में इतिहास के परिदृश्य पर नज़र रखने वाले आए और उन्होंने उनके क्रम पर, उस क्रम के परिणामों पर और फिर देश व समाज पर पड़ने वाले उसके प्रभाव पर विचार किया तो उनको कहीं न कहीं यह कहने का अवसर अवश्य मिल गया कि यदि ऐसा होता तो अधिक बेहतर था। फ़लां के बाद अगर फ़लां आया होता तो अधिक लाभदायक सिद्ध होता। अगर वह दूसरे नम्बर पर आया तो ज़्यादा बेहतर साबित होता और फिर जैसा कि किसी कहने वाले ने कहा कि एक शब्द "काश" ऐसा है कि मुझे सौ जगह लिखना पड़ा है।

वह भी सौ जगह पर लिखने को मजबूर होता कि काश! ऐसा होता, काश! वैसा होता, मैं फिर दावे के साथ कहता हूं कि केवल मुसलमान ही नहीं दुनिया की दूसरी क़ौमों के उच्च शिक्षा प्राप्त लोग पश्चिमी क़ौमों के बेहतरीन चिन्तक, इतिहास कार और फ़िलास्फ़र और बड़े–बड़े चर्चा करने वाले एकत्र होकर इस्लाम के पहले ज़माने के इतिहास का अध्ययन करें और उनको आज़ाद छोड़ दिया जाए और कह दिया जाए कि वे अपने दिमाग़ से और अपने ऐतिहासिक अध्ययन के प्रकाश में इस दीन की रक्षा करने वालों और उसको दुनिया में फैलाने वालों का एक चार्ट तैयार करें और एक नक़्शा बनाएं कि किस को किस के बाद

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:१० अक्टूबर २०१७ ई० वर्ष:७

संरक्षक: हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

निरीक्षक
मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्री- दारे अरफ़ात

सह सम्पादक
मौ० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

सम्पादकीय मण्डल
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाख़ुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

मुदक
मौ० हसन नदवी

अनुवादक
मोहम्मद सैफ़

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

इस अंक में:

सादगी मुस्लिम की देश औरों की अय्यारी भी देख.....२
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

आख़िरत का विचार.....३
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

असहाब–ए–रसूल की कुछ विशेष विशेषाएं.....५
मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

अहले बैत कौन?.....६
मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

सीरत–ए–नबवी कुरआन करीम के आइने में.....८
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

शहादत–ए–हुसैन रज़ि० का पैग़ाम.....१०
अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

इतिहास विजय गिनता है.....१२
इदारा

मुहर्रमुल हराम और ताज़ियादारी.....१३

जन्नती शहीद.....१६
मुहम्मद अरमुग़ान कुकरालवी नदवी

मिस्र सैन्य क्रान्ति के दो साल बाद.....१७
ख़लील अहमद हसनी नदवी

नमाज़ के फ़राएज़.....१८
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

इस्राईली अत्याचार.....२०
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

सम्पादक:बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला ख़ॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड़ रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

प्रति अंक 10रू

वार्षिक 100रू०

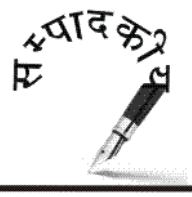

सम्पादकीय

सादगी मुस्लिम की देख, औरों की अय्यारी भी देख।

● बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

यहूदियों व ईसाईयों की इस्लाम से दुश्मनी कोई नई नहीं है। दोनो ने अपना सबसे बड़ा दुश्मन मुसलमानों को समझा है। मुसलमानों के हज़ार सालों के रोशन इतिहास उनके सामने है जो दुनिया का सबसे सुनहरा दौर था। सुख व शांति के दिये जलते थे। एक कमज़ोर औरत क़ीमती सामान के साथ कई–कई सौ मीलों का सफ़र करती, कोई उसके साथ छेड़ख़ानी नही कर सकता था। लेकिन यह सब क्योंकि इस्लाम के झन्डे के तले हो रहा था इसलिए उसके दुश्मनों ने उसे कभी अच्छी निगाह से नहीं देखा और यह सब कुछ उनकी आंखो का कांटा बना रहा और वे हमेशा उस कांटे को दूर करने के लिए कोशिश करते रहे। इसके लिए उन्होंने सारे उपाय किए। साज़िशों के जाल बुने और आख़िरकार वे अपनी कोशिश में कामयाब हो गए। दुनिया की बाग़डोर उनके हाथों में आ गयी। उसके बाद से ख़ून की नदियां बहने लगीं। इस्लाम के हज़ार साल के इतिहास में इतना खून न बहा होगा जितना खून विश्वयुद्धों में बहाया गया। दो करोड़ से ज़्यादा लोग मौत के घाट उतार दिए गये और उसके बाद भी इसका सिलसिला जारी है उसके लिए विभिन्न प्रकार के बहाने तैयार कर लिए जाते हैं।

वे दो क़ौमें जो एक दूसरे की बहुत बड़ी दुश्मन हो सकती थीं मुसलमानों को मिटाने के लिए एक हैं और इधर लगभग दो सौ साल से उन्होनें कोई कसर नहीं छोड़ी है और साज़िशों के ऐसे जाल बने कि मुसलमानों को मुसलमानों से लड़वाया, उनके अन्दर हर प्रकार का मतभेद पैदा किया। सही और पूर्ण इस्लाम से उनको काटने के लिए प्लान तैयार किए। जिसके नतीजे में इस्लाम के नाम पर मुसलमान मुसलमान का ख़ून बहाने लगे और जो काम खुद उन्हीं लोगों के लिए इतना आसान न होता वह काम मुसलमानों ही के द्वारा उन्होने करना शुरू कर दिया और अफ़सोस की बात यह है कि मुसलमान आसानी के साथ उनकी साज़िशों का शिकार होते चले गए।

इस्लामी दुनिया की वर्तमान स्थिति बहुत ही नाजुक है। बहुत से देशों में आईएसआईएस की कट्टरतावादी कार्यवाहियों ने इस्लाम की एक बहुत ही ख़राब छवि दूसरों के सामने प्रस्तुत की है जो दावत की राह में इस समय बहुत बड़ी रुकावट है। मुबस्सिरीन (चर्चा करने वालों) की राय में इस आन्दोलन के पीछे सहयूनी (यहूदी) दिमाग़ काम कर रहा है जिसके द्वारा वे अपने बहुत से उद्देश्यों की पूर्ति करने में लगे हुए हैं।

एक ओर मुसलमानों के द्वारा मुसलमानों का ख़ून बहाया जा रहा है तो दूसरी ओर यूरोप व अमरीका में दीनी शर्म व ग़ैरत वाला जो वर्ग रहता था और जिससे यूरोप व अमरीका को हमेशा ख़तरा लगा रहता था वह वर्ग इस्लामी जिहाद के नाम पर वहां से सफ़र का सामान बांध रहा है और इस प्रकार वह काम जो शायद उनके लिए बहुत ही मुश्किल था आसानी से अन्जाम पा रहा है और तीसरी ओर आईएसआईएस की कार्यवाहियों में नमक–मिर्च लगाकर और फ़र्ज़ी तस्वीरें तैयार करके इस्लाम की बहुत ही ग़लत तस्वीर दुनिया के सामने पेश की जा रही है जो इस्लाम की ओर तेज़ी से बढ़ते हुए रूझान के लिए एक रुकावट बनती जा रही है। और न जाने क्या–क्या उद्देश्य हैं जो उनके द्वारा पूरे किए जा रहे हैं।

यहूदियों व ईसाईयों की यह साज़िशें नई नहीं हैं। वे इस प्रकार मुसलमानों को इस्तेमाल करते हैं और दीन के नाम पर करते हैं कि इस्तेमाल होने वालों को बिल्कुल अन्दाज़ा नहीं हो पाता है कि उनके हथियारों का रुख़ किधर है। सूरत कुछ होती है और हक़ीक़त कुछ और उसके लिए बड़ी दूरदर्शिता की आवश्यकता पड़ती है। वरना दीन के नाम पर एक मुसलमान कभी–कभी वह काम करता है जो इस्लाम और मुसलमानों के लिए नासूर बन जाता है।

इस सिलसिले में सबसे बड़ा नमूना सीरत का है। सीरत का अध्ययन अगर गहरी नज़र से किया जाए तो सारी वास्तविकताएं खुल जाती हैं काम करने के तरीक़े विस्तारपूर्वक सामने आ जाते हैं और मुसलमान रास्ता भटक जाने से बच जाता है। अफ़सोस की बात यह है कि आज हम सीरत को मुकम्मल नमूना नहीं बनाते। कुछ हिस्सों को लेते हैं और इसका बड़ा हिस्सा छोड़ देते हैं। जो कार्यवाहियां की जाती हैं वह सीरत की रोशनी में उसके ऐन मुताबिक़ करने की कोशिश नहीं की जाती , जिसके नतीजे में हालात बिगड़ जाते हैं और वे परिणाम सामने आ जाते हैं जो मुसलमानों के लिए कष्टदायी साबित होते हैं।

आख़िरत का विचार

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

"अल्लाह जिसके लिए चाहता है रोज़ी बढ़ा देता है और जिसके लिए चाहता है कम कर देता है और वे दुनिया की ज़िन्दगी ही में मस्त हो गए जबकि दुनिया की ज़िन्दगी तो आख़िरत के सामने मामूली सामान से ज़्यादा कुछ नहीं।" (रअदः 25)

व्याख्याः इस आयत से मालूम हुआ कि संसार की वास्तविकता, आख़िरत के एक चटख़ारे (मज़े) से अधिक नहीं है। जैसे इनसान को कोई मज़े की चीज़ चखने या चाटने को मिल जाए, तो उसको थोड़ी देर के लिए मज़ा आता है हालांकि उसका कोई परिणाम नहीं होता और न ही उसमें ऐसा मज़ा होता है कि इन्सान की ज़िन्दगी को उससे कुछ मिल जाए।

"आख़िरत" एक सपाट ज़मीन की तरह है जिसमें कुछ नहीं उगता, न ही कुछ पैदा होता है। उसमें जो भी चीज़ पैदा होती है वह दुनिया के आमाल (कर्मों) से ही पैदा होती है। वह इस प्रकार की दुनिया में अल्लाह को खुश व राज़ी करने के लिए बहुत से ऐसे काम हैं कि उनके करने से वहां बाग़ लग जाएगा, बहुत से काम ऐसे हैं कि उनके करने से वहां घर बन जाएगा, बहुत से काम ऐसे हैं कि उनके करने से वहां नहरें बहने लगेंगी, यानि आदमी दुनिया की ज़िन्दगी में अपने लिए जो राहत के सामान करता है जैसेः बाग़ लगाता है, मकान बनाता है, और दूसरी सहूलतों के साधन करता है, मानो ये सब वहां जन्नत में मौजूद होंगे, लेकिन अन्तर यह है कि दुनिया में हम जो कुछ करते हैं, उसका फ़ायदा भी हमको यहीं मिल जाता है और जन्नत व आख़िरत का मामला यह है कि अगर हम दुनिया में कुछ काम करेंगे तब वहां उसका फ़ायदा होगा। हम यहां एक काम कर रहे हैं मानो अपने लिए बाग़ लगवा रहे हैं, एक काम कर रहे हैं, वहां अपने लिए बहुत से फ़ायदे और बहुत सी राहतों के सामान कर रहे हैं। मानों यहां काम करने से आदमी की जन्नत बनती रहती है। लेकिन जो यहां अपनी जन्नत न बना सके तो वहां उसको कुछ हासिल नहीं हो सकता, क्योंकि वहां न साया है, न ही मौसम का संतुलन है, इस दुनिया के जीवन में जो हम मौसम का संतुलन देखते हैं वह अल्लाह तआला के ख़ास करम के कारण है, यानि कितनी गर्मी पड़नी चाहिए, कितनी सर्दी पड़नी चाहिए, ये अल्लाह तआला ने इन्सान के बर्दाश्त के अनुसार दुनिया में कर रखा है। इसीलिए सब जानते हैं कि इतनी डिग्री गर्मी होती है, इतनी डिग्री सर्दी होती है, मानो कि यह अल्लाह तआला की तरफ़ से इन्तिज़ाम है कि इन्सान जितनी डिग्री में ज़िन्दगी गुज़ार सकता है, उसी हिसाब से मौसम को फ़िट कर दिया है।

मानो कि हम दुनिया में जो कुछ फ़ायदा उठा रहे हैं यह ख़ुद हमारी अपनी कोशिशों का नतीजा नहीं हैं, यह अल्लाह की ओर से दिया गया है। पानी हमको जो मिलता है, यह हम स्वयं नहीं बनाते और न कहीं से ला सकते हैं, बल्कि उसको अल्लाह तआला समन्दरो से बादलों के द्वारा भेजता है। और फ़रिश्ते लेकर आते है, और वहां–वहां बरसाते हैं जहां अल्लाह तआला चाहता है। फिर उससे सारे इनसानों को फ़ायदा पहुंचता है उनको भी जो अल्लाह का इन्कार करते हैं और काफ़िर हैं और मुसलमान को भी जो ईमान वाले हैं। जबकि आख़िरत में उसने यह तय कर रखा है कि वहां केवल उन्हीं लोगो को सब कुछ मिलेगा जो आज्ञा का पालन करने वाले हैं और दुनिया में आज्ञा मान कर गए हैं। जिन्होंने दुनिया में अल्लाह का शुक्र अदा किया है और तकलीफ़ों पर सब्र किया है। अल्लाह तआला उनके लिए वहां वो उपलब्ध कराएगा जो मनुष्यों की आवश्यकता है, इसीलिए आता है कि इनसान जो चाहेगा वहां उसको मिल जाएगा। और इस तरह मिलेगा कि वहां कुछ मेहनत भी नहीं करनी पड़ेगी। बल्कि अगर हमारी इच्छा होगी कि हमको फ़लां चीज़ मिले तो फ़ौरन वह चीज़ हमको पहुंच जाएगी। क्योंकि अल्लाह तआला ने वहां की व्यवस्था ही ऐसी बनायी है। लेकिन यह केवल उन लोगों के लिए है जो दुनिया से अच्छे काम और आज्ञा पालन के साथ जाएंगे और जो लोग यहां से अच्छे काम करके नहीं जाएंगे, उनको वहां वह चीज़ नहीं

मिलेगी। वहां उनको न मौसम का संतुलन मिलेगा, न उनको राहत का कोई और सामान मिलेगा। वहां ऐसी तपिश, ऐसी गर्मी, ऐसी तेज़ आग होगी जिसका अन्दाज़ा नहीं किया जा सकता। इस दुनिया की आग तो बहुत मामूली आग है लेकिन उस दुनिया की आग बहुत सख़्त आग होगी। इसलिए वहां अगर कोई व्यक्ति ऐसी कोई चीज़ लेकर नहीं गया है जिससे वहां उसको राहत मिले तो फिर उसको वहां की जो मुसीबतें हैं और तकलीफ़े हैं, वहां की जो आग है, वहां के जो अंगारे हैं और वहां के जो कड़वे फल हैं, वही मिलेंगे। लेकिन अल्लाह तआला रहीम व करीम है, इसलिए वह चाहता है कि उसके बन्दे उस मुसीबत से बचे रहें। यह वह दुनिया है जिससे आप किसी भी रेगिस्तान में चले जाएं तो वहां आपको सिवाए गर्मी व धूप व परेशानी के कुछ भी नहीं मिलेगा और अगर आप समन्दर में चले जाएं तो वहां पानी ही पानी मिलेगा। न आपको खाने के लिए कुछ मिलेगा, न पीने के लिए कुछ मिलेगा, सिवाए उसके जो आप लेकर जाएं। इसी तरह जब आदमी दुनिया से जाता है तो जो कुछ उसने तैयारी की होती है, वह लेकर जाता है। यानि उसके साथ केवल उसके कर्म जाते हैं बाक़ी और कोई चीज़ नहीं जाती।

"आख़िरत" बिल्कुल चटियल मैदान की तरह है। वहां मौसम भी नहीं कि बर्दाश्त के क़ाबिल हो, बल्कि सख़्त गर्मी, तपिश और लू होगी, उस वक़्त जब लोग उठाए जाएंगे तो सख़्त परेशानी में होगे और बेचैन होंगे कि किसी तरीक़े से हमारा हिसाब व किताब हो जाए और हम जल्दी से इस मुसीबत से छुटकारा पा जाएं। जब मुसीबत में हम खड़े हैं, कि सख़्त मौसम है और कोई सहारा नहीं, लेकिन यह भी चिन्ता होगी कि हिसाब व किताब हो जाए और हिसाब व किताब अच्छा भी निकले, क्योंकि अगर हिसाब अच्छा नहीं निकला तो उससे अधिक सख़्त मुसीबत में पड़ना पड़ेगा। इसीलिए अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी को सबकुछ समझते हो, हालांकि तुम्हारी यह कुछ साल की राहत, वहां के मुक़ाबले में कोई हैसियत नहीं रखती, जैसे कई सालों के मुक़ाबले में एक मिनट का वक़्त होता है, उसी प्रकार दुनिया का जीवन है जिसका अन्दाज़ा इनसान को तब होगा जब वहां पहुंचेगा। क्योंकि उस समय मनुष्य को सदा–सदा के जीवन के सामने दुनिया में गुज़ारे हुए कुछ साल बहुत कम मालूम होंगे, जिसको यूं समझा जा सकता है कि जब हम अपने अतीत पर निगाह डालते हैं तो हमें गुज़रा हुआ ज़माना बहुत छोटा लगता है और ऐसा लगता है कि अभी कुछ दिन की बात है जब यूं हुआ था। इसीलिए वहां दुनिया की ज़िन्दगी बहुत तुच्छ लगेगी लेकिन जब वहां कुछ न मिलेगा तो आदमी के पास बेचैनी और अफ़सोस के सिवा कुछ नहीं होगा। इसलिए कि अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

"हमने तुमको दुनिया में बहुत समझाया था, नबी भेजे थे, किताब उतारी थी, और तुम्हारे समझने के लिए हमने बहुत उपाय कर दिए थे, लेकिन तुमने ख़ुद समझने की कोशिश नहीं की, तुमने उसको मज़ाक़ समझा, तुमने समझा कि जो कुछ कहा जा रहा है वह यूं ही तफ़रीह है हालांकि तफ़रीह नहीं थी, हमने तुमको बार–बार ध्यान दिलाया था कि जहन्नम की आग से तुमको बचना है, अगर उससे बचने की कोशिश न करोगे तो फिर तुम कुछ नहीं कर सकते, तुम आख़िरत की मुसीबत से अपने को बचाओ, वही सख़्त मुसीबत है, तुम दुनिया की राहत में इस बात को न भूल जाओ कि एक बड़ी ज़िन्दगी सामने आने वाली है, वहां का आराम अस्ल आराम है, वहीं की तकलीफ़ अस्ल तकलीफ़ है, उसकी फ़िक्र ज़्यादा करो, तुम अपने एक–दो रोज़ के आराम के लिए उसको क़ुर्बान न कर दो।"

दुनिया में आख़िरत के लिए तकलीफ़ उठाने की मिसाल ऐसी ही है जैसे बचपन में आदमी को पढ़ाई की तकलीफ़ उठानी पड़ती है, काम सीखने की तकलीफ़ उठानी पड़ती है, जिसका उद्देश्य यह होता है कि आगे की तीस–चालिस साल वाली उम्र आराम से गुज़रे। इसीलिए आदमी बचपन में कुछ साल तक तकलीफ़ उठाता है, लड़को को मेहनत करायी जाती है और उनको कठिनाई होती है। ताकि हमारे यह कुछ साल तकलीफ़ से गुज़ारने के बाद हमारे बाक़ी के चालिस–पचास साल आराम से गुज़र जाएं। लेकिन दुनिया में हमारे इन चालिस–पचास साल के आराम का आख़िरत में लाखों–करोड़ो साल के आराम से कोई मुक़ाबला नहीं है।

इसीलिए फ़रमायाः दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के मुक़ाबले में एक चटख़ारे (मज़े) से ज़्यादा नहीं है। जिस मज़े में तुम पड़े हो, लेकिन तुम हमारी बातों को मान नहीं रहे हो, हालांकि हमने तुम्हारे लिए कितनी व्यवस्थाएं की, तुम्हारे लिए पानी उपलब्ध कराया, तुम्हारे लिए खाने की जो चीज़ें चाहीं वे ज़मीन में रखीं, जिनको तुम निकालते हो और इस्तेमाल करते हो और तुम्हारी हर ज़रूरत को हम पूरा करते हैं ताकि तुम अच्छे काम कर सको और जन्नत के अधिकारी हो सको।

असहाब-ए-रसूल की कुछ विशेष विशेषताएं

मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

रसूलुल्लाह स0अ0 ने सिर्फ़ 23 वर्षों के समय में ऐसा पवित्र समूह तैयार कर दिया जिसने न केवल नबवी स्वभाव और आप स0अ0 के दुनिया में आने के उद्देश्य को समझा; बल्कि उसकी हिदायतों व शिक्षाओं को लागू करने, नबवी तरीक़े व नमूने की ओर लोगों को आकर्षित करने व शौक़ दिलाने का व्यक्तिगत व सामूहिक रूप से अपने–अपने कार्यक्षेत्र में रहते हुए अन्जाम दिया। चाहे यह कार्यक्षेत्र छोटा हो या बड़ा हो, घर या मुहल्ले का हो या शहर व देश का और उससे आगे बढ़ कर राज्य की सीमाओं का, इस ज़िम्मेदारी को पूरा करने में ज़रा भी लापरवाही नहीं की।

चूंकि यह उम्मत उम्मत–ए–वस्त (मस्लिम समुदाय) है और एक रहबर व मिसाली उम्मत है जिसके लोगों ने रसूलुल्लाह स0अ0 के साथ कठिन से कठिन परिस्थितियों में रहकर और फिर अच्छे व खुशगवार माहौल में रहकर प्रशिक्षण प्राप्त किया था और वे इस कैफ़ियत के साथ हर मौक़े से रहते थे कि:

जहां कर दिया नर्म नर्मा गए वहां।
जहां कर दिया गर्म गर्मा गए वहां।।

और यह उम्मत, हिदायत वाली उम्मत है और आप स0अ0 के आने के साथ वह भी आयी है। अल्लाह तआला फ़रमाता है: "तुम बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए बरपा की गयी हो तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो।"

इसीलिए चारो ख़लीफ़ाओं ने सामूहिक व व्यक्तिगत रूप से इस ज़िम्मेदारी को अदा करने के लिए पूरी कोशिश की और रसूलुल्लाह स0अ0 के सभी सहाबा रज़ि0 उस पर अमल करने के लिए सरगर्म हो गए और हिदायत आम होती चली गयी।

रसूलुल्लाह स0अ0 से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले लोगो ने जिन्हें सहाबा का ख़िताब मिला, सुधार व दावत, तालीम व तब्लीग़ (शिक्षा व प्रचार), इरशाद व हिदायत का काम बराबर जारी रखा और उनके साथ के फ़ायदे व आन्तरिक नूर से फ़ायदा उठाने वाली जमाअत ताबईन की तैयार हुई जिन्होंने दीन का यथार्थ उनसे समझकर और इन्सान की हिदायत का दर्द पाकर दुनिया भर में उसको आम करने का जज़्बा और हौसला लिया और वे दुनिया में इस चिन्ता को लेकर फैल गए और इस्लाम की गोद में दुनिया भर की क़ौमों के लोग पूरे–पूरे गिरोह के साथ इस्लाम में दाख़िल होने लगे।

रसूलुल्लाह स0अ0 ने हिदायत, शिक्षा और दावत व तब्लीग़ के काम की अहमियत सहाबा के दिल व दिमाग़ में ऐसी डाल दी कि उसमें किसी सियासी व दुनियावी मसलहत को भी हावी नहीं होने दिया।

दीन की शिक्षा, दीन की समझ के बारे में दो अलग–अलग बातें फ़रमायीं। एक मौक़े पर फ़रमाया: "तुममे सबसे बेहतर वह है जो कुरआन सीखे और दूसरों को सिखाए।"

और फ़रमाया: "अल्लाह तआला जिसके साथ ख़ैर का मामला करना चाहते हैं तो उसे दीन की समझ अता फ़रमा देते हैं।"

सहाबा किराम रज़ि0 कोई क़दम उठाने से पहले इस बात को ध्यान में रखते थे कि उनका यह क़दम और अमल अल्लाह को खुश करने वाला है या नाराज़गी की वजह बनेगा ताकि उनका कोई क़दम अपने नफ़्स या फ़ायदे के लिए न हो। हज़रत अली रज़ि0 को काम गैर मामूली अहमियत का हामिल है कि जब एक मुक़ाबले में दुश्मन ने उनके ऊपर थूक दिया तो वे पीछे हट गए कि ऐसी सूरत में उठाया जाने वाला क़दम नफ़्स के लिए होगा। इसी तरह जब हज़रत उमर बिन अलख़त्ताब ने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को हटाया तो वे हज़रत अबू उबैदा बिन अल जर्राह के अधीन इस्लाम की रक्षा और प्रसार में दीनी जज़्बे और ठोस इरादे के साथ हिस्सा लेते रहे और बहकाने वालों को जवाब दिया कि मेरा मक़सद दीन की नुसरत और खुदा की रज़ा का पाना है न कि हज़रत उमर रज़ि0 की खुशनूदी के लिए। हज़रत मुआविया बिन अबी सुफ़ियान ने जब देखा कि उनके और हज़रत अली के मतभेद से रोम का बादशाह कैसर फ़ायदा उठाना चाहता है तो हज़रत अमीर मुआविया रज़ि0 ने कैसर–ए–रोम को एक ख़त भिजवाया और उसमें लिखा:

(शेष पेज 15 पर)

अहले बैत कौन ?

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

ईमान वाले का अहले बैत यानि नबी के घर वालों से मुहब्बत करना स्वाभाविक होने के साथ–साथ इन्सानी तक़ाज़ा (प्रकृति) भी है और ईमानी तक़ाज़ा (मांग) भी और इसीलिए इसकी याचना भी है कि उनसे मुहब्बत की जाए। मुहब्बत के दो प्रकार बयान किए गए हैं। एक स्वाभाविक प्रेम व दूसरा अक़्ली मुहब्बत और स्वाभाविक प्रेम के क्रम में मालूम है कि आदमी को अपने घर वालों से स्वाभाविक प्रेम होता है और रसूलुल्लाह स०अ० को भी अपने घर वालों से यह स्वाभाविक प्रेम था और इसमें कोई शक नहीं कि आपकी यह मुहब्बत उस समय और बढ़ जाती थी जब आपके दावत के कामों को आगे बढ़ाने में आगे–आगे होते थे। क्योंकि अस्ल में वही अहले बैत हैं जो एक ओर आपके घर से ख़ानदानी एतबार से संबंध रखते हों और दूसरी ओर आप स०अ० से उनका संबंध दीन के आधार पर भी हो यानि वे नबी के रास्ते पर हों और नबी के कामों को लेकर आगे बढ़ने वाले हों। उन्हीं को अहले बैत कहते हैं। लेकिन उन दोनो चीज़ों में से कोई भी एक न हो तो वह अहले बैत नहीं हो सकता। उसी प्रकार वे लोग जो घर वालों में ख़ानदान के एतबार से तो हैं लेकिन आदत व तरीक़े के एतबार से वे बाहर वालों के साथ हैं तो उनकी गिनती अहले बैत में नहीं होगी। जिसकी शानदान मिसाल नूह अलै० की है। जब हज़रत नूह अलै० ने स्वाभाविक प्रेम के आधार पर अपने बेटे को बचाना चाहा तो कहा था: "ऐ मेरे रब! मेरा बेटा मेरे घर वालों में से है।" लेकिन चूंकि वह काफ़िरो के साथ था इसलिए अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया: "वह आपके घर वालों में से नहीं है।"

व्यक्ति के अन्दर यदि योग्यता होती है तो वह योग्य होता है और जब योग्यता ही न हो तो योग्य नहीं हो सकता और योग्यता के न होने के कारण ईमान का न होना है। जैसे– बीवी को अहिल्या इसीलिए कहा जाता है कि इन्सान ने जिस औरत से शादी की है तो मानो उसने उसे अपने घर के लायक़ समझा और इस बात का योग्य समझा कि उससे शादी हो सकती है। इसीलिए उसको अहिल्या (पत्नी) कहा जाता है। क्योंकि अरबी भाषा में अहल उसको कहते हैं जिससे आबादी हो बर्बादी न हो, सुकून हो बेचैनी न हो, जिससे बढ़ोत्तरी हो कमी न हो, जिससे अच्छा लगे बुरा न लगे और जिससे साथ निभ सके, ख़राबी न हो, इन योग्यताओं वाले व्यक्ति को अहल कहते हैं।

इसी प्रकार अहले बैत में आपके ख़ानदान के वे लोग हैं जो आप के लगाए हुए पौधों को पानी देने वाले हों और आपके चलाए हुए काम को आगे बढ़ाने वाले हों, दीन के कामों में बढ़ोत्तरी करने वाले हों, दावत को फैलाने वाले हों, यदि ये बात नहीं है तो वे अहले बैत की सूची से बाहर हैं। इसी लिए वे सभी राफ़्ज़ी (एक समूह जो अहले बैत होने का दावा करता है) जो अपने को अहले बैत होने का दावा करते हैं वे सब ख़ारिज हैं। उनका अहले बैत से कोई संबंध नहीं। इसीलिए यह बात अच्छी तरह ध्यान में रखनी चाहिए कि यदि मनुष्य में योग्यता है तो वह योग्य है और अहले बैत में से है और यदि योग्यता नहीं तो वह अहले बैत में से नहीं हो सकता। यहां तक कि अगर कोई व्यक्ति योग्यता वाला है तो वह योग्य और अहले बैत में से है और अगर योग्य नहीं है तो वह अहले बैत में से नहीं हो सकता है। यहां तक कि यदि कोई व्यक्ति योग्यता रखता है लेकिन ख़ानदान के एतबार से आपका घरवाला नहीं है तो उसकी योग्यता के आधार पर उसको अहले बैत ही में गिना जाएगा, जैसा कि आप स०अ० ने हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० से फ़रमाया: "सलमान हमारे घरवालों में से हैं" हालांकि हज़रत सलमान रज़ि० ईरान के रहने वाले और अजमी (द्रविड़) हैं, लेकिन फिर भी आप स०अ० ने फ़रमाया: "ये मेरे घर वालों में से हैं" अतः मालूम हुआ कि जो द्रविड़ हैं वे भी घर वालों में से हो सकते हैं और जितने अरबी हैं वे तो घर वालों में से ही हैं जबकि जो अजमी हैं जिनसे कोई रिश्तेदारी नहीं जैसे ईरानी और अफ़्ग़ानी, जैसेः हज़रत सुहैब रूमी तो ये भी अहले बैत में से हो सकते हैं, मानो जो व्यक्ति अपनी योग्यता दिखाए और अल्लाह की राह में मेहनते करे, परेशानी उठाए तो वह भी अहले बैत में शामिल हो जाएगा।

कहने का अर्थ यह कि अहले बैत की सूची में नम्बर एक पर वे होंगे जो रिश्तेदारी के एतबार से क़रीब हैं और दीन का काम करने के एतबार से भी क़रीब हैं, जैसेः हज़रत फ़ातिमा, हज़रत हसन व हुसैन, हज़रत अली और हज़रत हमज़ा, हज़रत जाफ़र (रज़ि०) इत्यादि इसी प्रकार दूसरे जो रिश्तेदारी के एतबार से निकट से निकटतम हैं,

यानि आपकी बेटियां और आपके बेटे और आपकी पत्नियां भी आपके घरवालों में शामिल हैं और उसके बाद जो जितना निकट का रिश्तेदार होगा वह उतना ही अहले बैत में से होगा और उसके बाद अहलेबैत की सूची में वे लोग भी गिने जाएंगे जो आपके काम में सहयोगी हैं।

लेकिन एक बात ध्यान में रखना चाहिए कि जो लोग अहले बैत की सूची में ख़ानदान व दीन का काम करने के एतबार से आते हैं उनसे नफ़रत करने या उनके ख़िलाफ़ कहने में मनुष्य को बहुत संकोच करना चाहिए क्योंकि अपने घर वालों से मुहब्बत करना मनुष्य के लिए स्वाभाविक बात है। अतः हममें से अगर किसी ने भी ज़रा सा भी किसी घर वाले के संबंध से कोई बात ऐसी कह दी जो उनकी शान के ख़िलाफ़ थी तो यह बात अल्लाह के रसूल स0अ0 की तकलीफ़ का कारण बन सकती है और आप स0अ0 को तकलीफ़ देना ईमान के ख़ात्मे का कारण बन सकता है।

हदीस में आता है कि वह वहशी जिसने हज़रत हमज़ा रज़ि0 को शहीद किया था जब इस्लाम में दाख़िल हुआ तो आप स0अ0 ने उसके ईमान को क़ुबूल फ़रमा लिया हालांकि यदि कोई दूसरा होता तो उसे बड़ी मुश्किल से क़ुबूल करता। क्योंकि उसका गुनाह बहुत संगीन था लेकिन क्योंकि इस्लाम का दामन बहुत फैला हुआ है, उसमें जो व्यक्ति चाहे दाख़िल हो सकता है अतः वे भी आ गए और उन्होंने ईमान क़ुबूल कर लिया लेकिन फिर भी हुज़ूर–ए–अकरम स0अ0 को अपने प्यारे चचाजान से स्वाभाविक प्रेम के आधार पर आपने उन वहशी से कहा कि यह बताओ तुमने मेरे चचा को कैसे मारा था?तो उन्होंने पूरा नक़्शा खींचा यहां तक कि आप स0अ0 के आंसू जारी हो गए, और प्यारे चचा याद आ गए, क्योंकि वे आप स0अ0 से बहुत मुहब्बत करते थे, इसीलिए अल्लाह के रसूल स0अ0 को भी उनसे बहुत मुहब्बत थी। इसीलिए आप स0अ0 ने हज़रत वहशी रज़ि0 से एक बात कही–जो कि इबरत के क़ाबिल बात है, आप स0अ0 ने कहाः वहशी अगर तुमसे यह हो सके कि मेरे सामने न आओ तो ऐसा कर लो, क्योंकि मैं जब तुमको देखूंगा, प्यारे चचा याद आ जाएंगे। ध्यान रहे कि आप स0अ0 के इस इरशाद का यह अर्थ बिल्कुन नहीं था कि आपको वहशी से नऊज़बिल्लाह नफ़रत हो गयी थी बल्कि यह इसलिए कहा कि जब वे सामने आएंगे तो आप स0अ0 को अपने चचा याद आएंगे और दिली तकलीफ़ होगी और आप स0अ0 की यह दिली तकलीफ़ उनके ईमान के ख़ात्मे और जन्नत से महरूमी का कारण बन जाएगी। अतः प्रेमवश आप स0अ0 ने उनसे यह कहा कि आप मेरे सामने न आना ताकि कहीं ऐसा न हो कि अनजाने में उनका ईमान ही न चला जाए।

इस घटना से यह समझा जा सकता है कि अगर कोई व्यक्ति हज़रत अली या हज़रत हसन या हज़रत हुसैन, हज़रत फ़ातिमा रज़ि0 से आप स0अ0 को किस क़द्र तकलीफ़ होगी। इसी तरह से इस तरह की सोच रखने वाले लोगों का ख़ात्मा हमेशा बुरा ही होता है। शायद इसी बुनियाद पर हज़रत मुजद्दिद अलफ़े सानी रह0 ने लिखा हैः "अच्छे ख़ात्मे में अहले बैत की मुहब्बत का बड़ा दख़ल है।" इसीलिए जब हज़रत मुजद्दिद साहब रह0 इन्तिक़ाल के समय पूछा गया कि आपका कहना था "अच्छे ख़ात्मे में अहले बैत की मुहब्बत का बड़ा दख़ल है।" लिहाज़ा आप आख़िरी समय में ख़ुद क्या महसूस कर रहे हैं?तो निकलते हुए फ़रमायाः माशा अल्लाह मुझे इसका असर महसूस हो रहा है और मेरा ईमान पर ख़ात्मा हो रहा है। मानो इससे भी मालूम हुआ कि अहले बैत किराम रज़ि0 के बारे में बहुत चौकन्ना रहने की आवश्यकता है।

मुहब्बत के बारे में यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि इनसान मुहब्बत करने में उन लोगो के रास्ते पर न चला जाए जिन्होंने दिखावे में अहले बैत की मुहब्बत का ढिंढोरा पीट रखा है, हालांकि अगर देखा जाए तो अहले बैत के सबसे बड़े दुश्मन भी वही हैं और यह दुनिया का शुरू से नियम रहा है कि जिन लोगो के अन्दर जो चीज़ नहीं होती वे उसी का ढिंढोरा ज़्यादा पीटते हैं। इसी तरह जिनको अहले बैत से मुहब्बत नहीं है वही लोग मुहब्बत का ज़्यादा शोर करते हैं। हालांकि मुहब्बत का यह मतलब नहीं है कि किसी के बेजा फ़ज़ाएल बयान किए जाएं।

शियों का विरोध करना यद्यपि ऐन ईमान है क्योंकि जितना उन्होंने अहले बैत किराम रज़ि0 और नबी अकरम स0अ0 को नुक़सान और तकलीफ़ पहुंचायी है, उतनी शायद ही किसी क़ौम ने किसी को पहुंचायी हो। लेकिन इसके साथ–साथ यह भी याद रहे कि हम उनके विरोध में इतने आगे न चले जाएं कि हज़रात हसनैन रज़ि0 और हज़रत अली मुर्तज़ा रज़ि0 के बारे में भी हमारा दिल साफ़ न हो क्योंकि अगर ऐसा हुआ तो इसका नतीजा यह होगा कि हमारा ईमान ख़तरे में पड़ जाएगा।

सीरत-ए-नबवी
क़ुरआन करीम के आइने में

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

नाफ़रमानों का अन्जाम:

बात न मानने वालों और नाफ़रमानी करने वालों के अन्जाम के बारे में क़ुरआन मजीद में बहुत सी जगह बताया गया है। एक जगह उनकी इच्छा को बयान करते हुए इरशाद होता है:

"जिन्होंने इन्कार किया और रसूल की बात न मानी उस दिन वे तमन्ना करेंगे कि काश! वे मिट्टी में मिला दिए गए होते।" (सूरह निसाः 42)

सूरह अन्फ़ाल में अल्लाह और उसके रसूल (स0अ0) की नाफ़रमानी करने वालों और उनसे दुश्मनी मोल लेने वालों को सख़्ती से चेतावनी दी जा रही है कि:

"और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल से दुश्मनी मोल लेता है तो इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है।" (सूरह अन्फ़ालः 13)

वास्तविकता यही है कि आप (स0अ0) की नाफ़रमानी वही करेगा जो अपनी इच्छाओं के पीछे चलेगा। उसके सामने केवल अपनी चाहतें और दौलत व इज़्ज़त की हवस होगी। उसको न सच की तलाश होगी और न वह अपने ख़ालिक व मालिक की ओर से सच को पहचानना चाहेगा। अल्लाह तआला का इरशाद है:

"और उनमें वे भी हैं जो कान लगाकर आप की बात सुनते हैं फिर जब आपके पास से निकलते हैं तो इल्म रखने वालों से पूछते हैं कि उन्होंने अभी क्या कहा? ये वे लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है और वे अपनी इच्छाओं पर चले हैं।" (सूरह मुहम्मदः 16)

एक आयत में कुफ़्र का अल्लाह के रास्ते से रोकने और अल्लाह के रसूल (स0अ0) से दुश्मनी करने का बयान एक साथ किया जा रहा है और फिर इरशाद होता है कि ये चीज़ें वे हैं जो बड़े से बड़े काम को बेकार कर देती हैं और ऐसा करने वाले किसी का नुक़सान नहीं करते बल्कि अपना नुक़सान करते हैं, इरशाद है:

"यक़ीनन जिन्होंने इन्कार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका और अपने पास हिदायत की राह आने के बाद भी रसूल से दुश्मनी की वे हरगिज़ अल्लाह को नुक़सान नहीं पहुंचा सकते और वह उनके सब काम ग़ारत कर देगा।" (सूरह मुहम्मदः 32)

सूरह निसा में भी इसी विषय को स्पष्टता के साथ यूं बयान किया गया है:

"और जो सही रास्ता सामने आ जाने के बाद भी रसूल का विरोध करेगा और ईमान वालों के रास्ते से हट कर चलेगा वह जिधर भी रुख़ करे, उसी रुख़ पर उसे हम डाल देंगे और हम उसको जहन्नम रसीद करेंगे और वह बदतरीन ठिकाना है।" (सूरह निसाः 115)

इस आयत से बड़ी वास्तविकताएं सामने आती हैं। एक ओर इताअत (पैरवी) के दायरे को बढ़ाया जा रहा है। उसकी व्याख्याओं से परिचय कराया जा रहा है। और दूसरी तरफ़ ये वास्तविकता भी बयान की जा रही है कि अल्लाह व रसूल (स0अ0) की इताअत करने वाले हज़रात सहाबा वे हैं जो सम्पूर्ण पैरवी करके पैरवी करने वाले से पैरवी किए जाने वाले के दर्जे पर पहुंच गए और हर दौर में ऐसे लोग रहेंगे जो सम्पूर्ण अनुसरण का प्रदर्शन करेंगे और मुकम्मल पैरवी करके उनको भी यह स्थान प्राप्त होगा कि वे खुद अनुसरण योग्य होंगे। उनका हर कार्य अल्लाह के रसूल (स0अ0) के मुबारक कार्य के अनुसार होगा। इसीलिए उनकी इताअत (पैरवी) भी अल्लाह के रसूल (स0अ0) की पैरवी होगी और उम्मत में एक ऐसा वर्ग हर दौर में रहेगा जो गुमराही का शिकार नहीं होगा और उसका किसी बात पर सहमत हो जाना उस बात के हक़ (सत्य) होने की दलील समझी जाएगी, ये वही तबका (वर्ग) होगा जिसका जीवन भी पूरी तरह से अल्लाह के रसूल (स0अ0) के अनुसार होगी। इसीलिए एक हदीस में अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने फ़रमाया:

"मेरी उम्मत गुमराही पर सहमत नहीं हो सकती।"

अहले किताब का इन्कार

आप स0अ0 के आने के समय दो क़ौमें ऐसी थीं जिनके पास पिछली किताबें किसी न किसी शक्ल में मौजूद थीं, जबकि उनमें बहुत से बदलाव हो चुके थे,

लेकिन बहुत से हुक्म अपनी अस्ल शक्ल में बाक़ी थे और उन में आप (स0अ0) के आने की ख़बर दी गयी थी। उनमें यहूदी बड़ी तादाद में मदीना मुनव्वरा में रहते थे और ईसाईयों की भी एक बड़ी तादाद आस–पास के क्षेत्रों में मौजूद थी। यहूदियों का हाल तो यह था कि वे आप (स0अ0) के आने से पहले औस व ख़ज़रज पर बार–बार यह बात जतलाते थे कि एक नबी आने वाला है और उसके आने के बाद हमारी ताक़त सबसे बढ़कर होगी। चूंकि अब तक हज़रत इब्राहीम अलै0 के बाद नबूवत का सिलसिला बनू इस्हाक़ में चला आ रहा था, इसलिए यहूदियों का ख़्याल यह था कि आख़िरी नबी भी बनू इस्हाक़ ही में होगा, जबकि उनकी किताबों में जो भविष्यवाणी थी उसमें बहुत से इशारे उनके अनुकूल न थे मगर यह उनके दिल की इच्छा थी जिसको वे छिपाए बैठे थे। इसीलिए जब आप (स0अ0) की बेसत हुई और औस व ख़ज़रज ने ईमान लाने की पहल की तो यहूदियों के सीनों पर सांप लोट गया। उनको न किसी की बरतरी गवारा थी न ही बनू इस्हाक़ से हट कर किसी का नबी होना गवारा किया, होना तो यह चाहिए था कि वे निशानियों से पहचान कर सबसे ज़्यादा आख़िरी नबी का इस्तक़बाल करते, उन पर ईमान लाते, और सहयोगी बनते, बजाए इसके वे सख़्त दुश्मनी पर उतर आए।

अल्लाह तआला एक जगह उनकी नबियों के साथ वादा ख़िलाफ़ी, बदसुलूकी और उनके घमण्ड भरे बर्ताव का ज़िक्र करते हुए इरशाद फ़रमाता है:

"और यक़ीनन हमने मूसा को किताब दी और उनके बाद लगातार रसूल भेजे और ईसा बिन मरियम को खुली निशानियां दीं और रूहुलकुद्स (हज़रत जिब्राईल अलै0) से उनकी ताईद की फिर भी क्या (ऐसा नहीं हुआ कि) जब भी कोई रसूल तुम्हारे पास ऐसी चीज़ों के साथ आया जो तुम्हारी मनचाही न थीं तो तुम अक़ड़ गए तो कुछ (नबियों) को तुमने झुठला दिया और कुछ को क़त्ल करने पर लग गए।" (सूरह निसाः 42)

आगे उनकी हठधर्मी के नतीजे में अल्लाह के ग़ज़ब का ज़िक्र है, इरशाद होता है:

"बदतरीन सौदा किया उन्होंने अपनी जानों का कि वे उस चीज़ का इन्कार करने लगे जो अल्लाह ने उतारी, महज़ जलन में कि अल्लाह अपने फ़ज़ल को अपने बन्दों में जिस पर चाहता है नाज़िल फ़रमाता है, तो गुस्से पर गुस्सा लेकर वह फिरे और इन्कार करने वालों के लिए ज़िल्लत का अज़ाब है।"

इन निशानियों की वजह से जो तौरेत और इन्जील में मौजूद थीं, उनको यक़ीन था कि आप ही अल्लाह के नबी हैं, लेकिन इसके बावजूद केवल हठधर्मी में मानने को तैयार न थे, अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"जिनको हमने किताब दी वे आपको उसी तरह पहचानते हैं जिस तरह अपने बेटों को पहचानते हैं और यक़ीनन इसमें कुछ लोग जानते बूझते हक़ को छिपाते हैं।" (सूरह बक़राः 146)

यही बात सूरह इनआम में भी कही गयी:

"जिन लोगो को हमने किताब दी है उस (रसूल) को ऐसे पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं, जिन्होने अपने आपको नुक़सान में डाला बस वही ईमान नहीं लाते।" (सूरह इनआमः 20)

अल्लाह तआला ने उनकी इस हठधर्मी की बिना पर उनके दिलों पर मुहर लगा दी और फ़रमायाः

"अल्लाह ऐसे लोगों को कैसे हिदायत दे सकता है जिन्होंने मानने के बाद इन्कार किया जबकि उन्होंने मुशाहदा कर लिया कि रसूल बरहक़ हैं और उनके पास खुली निशानियां आ चुकीं और अल्लाह ऐसे नाइन्साफ़ों को हिदायत नहीं दिया करता। ऐसे लोगों की सज़ा यही है कि उन पर अल्लाह की और फ़रिश्तों की और तमाम लोगों की फिटकार है। वे उसी में पड़े रहेंगे, न उनसे अज़ाब हल्का किया जाएगा और न उनको मोहलत दी जाएगी।" (सूरह आले इमरानः 86–88)

दूसरी आयत में इरशाद होता है कि:

"तो अगर वे भी उसी तरह ईमान ले आएं जैसे तुम ईमान लाए हो तो वे राह पर आ गए और अगर वे फिरे ही रहे तब वे बड़ी दुश्मनी में पड़े ही हैं, बस करीब ही अल्लाह तआला तुम्हारे लिए उनसे निपट लेगा और वह बहुत सुनने वाला और बहुत जानने वाला है।"

(सूरह सूरह इनआमः 20)

शहादत-ए-हुसैन का पैग़ाम

अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

इच्छाएं जब दीन का चोला ओढ़ती हैं तो बिदअत का अस्तित्व होता है। इनका अगर गहराई से निरीक्षण किया जाए तो बिदआत के पीछे कुछ इस प्रकार की सोच काम करती नज़र आती हैं, अल्लाह का दीन नाकाफ़ी है, अल्लाह का दीन मुश्किल है, अल्लाह का दीन अनावश्यक है।

पहली सूरत सन्यास को जन्म देती है। दूसरी सूरत इच्छापूर्ति, सुविधाओं की उपलब्धता और कर्म न करने की ओर ले जाती है, इसी से फिर मनुष्य तीसरी और अन्तिम अवस्था में पहुंचता है।

इस समय जो बिदआत चलन में हैं उसमें दूसरी सूरत अधिक कार्यरत है। क्योंकि मक्कार ज़हनियत (सोच) दीन के नाम पर ही दीन से फ़रारी चाहती है। इसलिए दीनदारी के भरम को बाक़ी रखने के दावे पर छलावा देने वाली बिदअतें अस्तित्व में आती हैं जिसके परिणाम में पहले बद्दीनी और आख़िर में पूरी तरह बेदीनी ही आ जाती है। दीन सम्पूर्ण रूप रस्मों और खुराफ़ातों का संग्रह बन जाता है। यहूदियों में "दीन को कमतर समझने" का रोग था जिसके कारण दीन उसी प्रकार इच्छाओं की भेंट चढ़ गया कि दीन के नाम पर इच्छा पूर्ति या सही शब्दों में पूरी तरह से नफ़्स परस्ती वजूद में आ गयी जिसके बाद फिर नबियों को झुठलाया जाने लगा और क़त्ल किया जाने लगा, कारण केवल यह था कि दीन को अपनी इच्छापूर्ति की भेंट चढ़ा दिया गया था।

"तो क्या ऐसा नहीं हुआ? कि जब भी तुम्हारे पास रसूल वह संदेश लेकर आए जो तुम्हारी नफ़्स की इच्छाओं के अनुसार नहीं होता तो तुम घमन्ड करने लगते (इसी का परिणाम था) एक वर्ग को झूठा घोषित कर दिया और एक वर्ग को क़त्ल भी करते थे।"

यहूदियों की सभी बिदअतों व खुराफ़ातों का दरवाज़ा इसी विचार से खुला कि अल्लाह का दीन बहुत कठिन है। नसारा (ईसाई) बिल्कुल इसके उल्टे चले, उन्होंने अल्लाह के दिए हुए दीन को अपर्याप्त समझा, फिर ग़लत प्रकार के सन्यास के द्वारा दीन के नाम पर वे तमाशे किए कि न दीन के रहे और न दुनिया के रहे। स्वयं हज़रत ईसा अलै0 के लाए हुए दीन को एक पहेली बना दिया। फिर इसी पहेली को दीन का आधार घोषित करके हमेशा के लिए सही दीन को खो दिया। ईसाईयत की गुमराही के पीछे यही विचार मिलेगा कि अल्लाह का दीन नाकाफ़ी है। कुरआन मजीद इसी को इस प्रकार बयान करता है:

"ऐ किताब वालो अपने दीन में गुलू (बढ़ावा) न करो, अल्लाह पर वही बात कहो जो सच है।"

और इसी से मिलता-जुलता मामला मुस्लिम उम्मत के बहुत से वर्गों के साथ हुआ। बहुतों ने जांबाज़ वाक़्यों को आधार बनाकर अपनी पूरी ज़िन्दगी को उनसे जोड़ दिया, इस तरह से वही अस्ल दीन बन गया। हद से बढ़े हुए दिखावे ने रस्म व रिवाज को बढ़ावा दिया। जिस दीन की बुलन्दी के लिए अहले बैत रसूलुल्लाह स0अ0 ने अपने पूरे घराने को कुर्बान किया था उसी घटना को आधार बनाकर दीन को सही रुख़ से हटाने का प्रयास किया गया। उसके द्वारा सच्चाई, महानता व त्याग का जो सबक़ मिलता था उसको भुलाकर उसकी जगह रोना धोना, कम हिम्मती और लाचारगी का पाठ उम्मत को पढ़ाने लगे। यह ऐतिहासिक जुर्म लगातार होता रहा और उन श्रेष्ठ आत्माओं की शहादत का अस्ल संदेश निगाहों से ओझल होता रहा।

हज़रत हुसैन रज़ि0 की शहादत की घटना इतिहास के दिल का कारी ज़ख़्म (बड़ी चोट) है। रसूलुल्लाह स0अ0 का हर वफ़ादार व सच्चा उम्मती उसकी चोट अपने दिल पर महसूस करता है और इतिहास के उन

मक्कार व धोखेबाज़ मुहब्बत का दम भरने वाले दावेदारों को माफ़ करने के लिए हरगिज़ तैयार नहीं जिन्होंने अपने घर बुलाकर उस महान अतिथि को शहीद कर डाला। इसी प्रकार वे मुजरिम भी किसी तरह माफ़ी के क़ाबिल नहीं जिन्होंने ख़ानदान–ए–नबूवत के हंसते–बसते घराने को उजाड़ने की कोशिश की और मासूम कलियों तक को मसल कर रख देने में कोई दर्द महसूस नहीं किया। बेग़ैरती की इतिहास में इससे बड़ी कोई मिसाल नहीं मिलती। उम्मत इस पर शर्मसार है। यह सारी बातें अपनी जगह ठीक हैं लेकिन क्या हज़रत हुसैन रज़ि0 की शहादत का यही मक़सद था कि लोग रोने–रुलाने, ताज़ियादारी और मातम को अपना अस्ल दीन बनाकर उस दीन को मिटा डालें जिसे आबाद करने के लिए इतनी बड़ी कुर्बान दी गयी? यह उनकी शहादत के साथ बड़ा ज़ुल्म है।

सच यह है कि हज़रत हुसैन रज़ि0 से दीनी, रूहानी, जज़्बाती मुहब्बत रखने वाले हक़ व सच्चाई के ध्वजवाहक होते हैं, ताज़िये के अलमबरदार नहीं। वे जिगर का खून दे कर इस्लाम के गुलशन को सींचते हैं आंसुओं का ढोंग रचाकर नहीं। हुसैन से सच्ची मुहब्बत रखने वाले सुन्नते रसूल स0अ0 के उजाले बिखेरते हैं, ख़ुराफ़ात के अंधेरे नहीं।

अल्लाह तआला को अपना दीन बहुत प्यारा है। उसकी पूरी पैरवी का हुक्म खुद रसूलुल्लाह स0अ0 को भी था:

"फिर हमने आपको इस दीन के ख़ालिस रास्ते पर मुक़र्रर कर दिया, आप इसी की पैरवी करें, उन लोगों की इच्छाओं की पैरवी न करें जो कुछ नहीं जानते।"

रसूलुल्लाह स0अ0 ने इस पाक अमानत को पूरी तरह से अपनी उम्मत तक पहुंचाया। इसीलिए अपना पाक ख़ून बहाया। रातों को उठ–उठ कर आंसुओं के नज़राने पेश किए, इस राह में बड़ी से बड़ी जो कुर्बानी हो सकती है वह दी, ख़ुद ही इरशाद फ़रमाते हैं:

(अल्लाह के रास्ते में जितना मुझे सताया गया किसी को नहीं सताया गया)

फिर हज़रात सहाबा किराम रज़ि0 ने इस अमानत की रक्षा की। हज़रात खुल्फ़ाए राशिदीन (रसूलुल्लाह स0अ0 के बाद इस्लामी साम्राज्य पर ख़िलाफ़त करने वाले पहले चार ख़लीफ़ा) इस अध्याय में सबसे श्रेष्ठ थे। सिद्दीक़–ए–अकबर (रज़ि0) हो या फ़ारूक़–ए–आज़म (रज़ि0), उस्मान–ए–ग़नी (रज़ि0) या अली–ए–मुर्तुज़ा (रज़ि0)। सहाबा किराम (रज़ि0) हो या अहले बैत (रज़ि0), (रसूलुल्लाह स0अ0 के ख़ानदान वाले) रसूलुल्लाह स0अ0 की पत्नियां (रज़ि0) हों या रसूलुल्लाह स0अ0 की बेटियां (रज़ि0) सबका मिशन यही था कि इस मुबारक दीन की शमा जलती रहे, यह चिराग़ कभी न बुझने पाए, इसी चिराग़ को रोशन करने के लिए हज़रत हुसैन (रज़ि0) ने अपने ख़ानदान वालों के साथ अल्लाह के दरबार में जान की कुर्बानी पेश की, फिर यही मुबारक दीन ताबईन, तबअ ताबईन, हज़रात–ए–मुहद्दिसीन, (हदीस के ज्ञानी) मुस्लहीन (सुधारक) व मुजाहिदीन (जिहाद करने वाले) के द्वारा हम तक पहुंचा और इसी दीन को बहुत से नादान और बेवकूफ़ बिदआत व ख़ुराफ़ात के अंधेरे में ढकेलना चाहते हैं। नादान यह नहीं जानते के ख़ुराफ़ात के ज़रिए तकलीफ़ पहुंच रही है। जिन मुबारक व पाक हस्तियों ने दीन व शरीअत, इस्लाम व ईमान, हक़ व सच्चाई के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया था, क्या इन बिदआत व ख़ुराफ़ात से वे ख़ुश होंगे? अल्लाह ने समझ दी है उसकी रोशनी में ग़ौर किया जाए।

सब्र का फल

हज़रत मआज़ बिन जबल रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह स०अ० ने फ़रमाया: "दो मुसलमान (मियां–बीवी) जिनके तीन बच्चे ख़त्म हो जाएं, अल्लाह तआला उनको जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा, अपनी रहमत के फ़ज़्ल से, सहाबा ने पूछा: या रसूलुल्लाह स०अ० अगर दो बच्चे ख़त्म हो गए हों? फ़रमाया: दो बच्चों का भी यही हुक्म है, पूछा गया: अगर एक बच्चा ख़त्म हुआ हो, फ़रमाया एक बच्चे का भी यही हुक्म है, फिर फ़रमाया: क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, बिला शुब्हा अधूरा बच्चा अपनी मां को अपनी नाफ़ के ज़रिए खींचता हुआ ले जाएगा, यहां तक कि उसको जन्नत में दाख़िल कर देगा, अगर उसकी मां ने उसकी मौत पर सवाब की पुख़्ता उम्मीद रखी हो।"

इतिहास विजय गिनता है ....

इदारा

ये 1973 की बात है। अरबों और इस्राईल के बीच जंग छिड़ने वाली ही थी। ऐसे में अमरीकी सिनेटर एक अहम काम के वजह से इस्राईल आया। वह हथियार बनाने वाली कम्पनी का प्रमुख था। उसे तुरन्त इस्राईल के प्रधानमंत्री गोल्ड अमाएर के पास ले जाया गया।

गोल्ड अमाएर ने एक घरेलू औरत की तरह सिनेटर का स्वागत किया और उसे अपने किचेन में ले गयी। यहां उसने अमरीकी सिनेटर को एक छोटी सी डाइनिंग टेबल के पास कुर्सी पर बिठाकर, चूल्हे पर चाय के लिए पानी रख दिया और खुद भी वहीं आ बैठी। उसके साथ उसने तोपो, जहाज़ों और मिज़ाइलों का सौदा शुरू कर दिया। अभी भाव–ताव जारी था कि उसे चाय के पकने की खुशबू आयी। वह ख़ामोशी से उठी और चाय दो प्यालियों में उंडेली। एक प्याली सिनेटर के सामने रख दी और दूसरी गेट पर खड़े अमरीकी गार्ड को थमा दी फिर दोबारा मेज़ पर आ बैठी और अमरीकी सिनेटर से बातचीत करने लगी।

कुछ ही देर की बातचीत और भाव–ताव के बाद शर्तें तय हो गयीं। उसी बीच गोल्ड अमाएर उठीं, प्यालियां समेटी और उन्हें धोकर वापिस सिनेटर की ओर पलटीं और बोलीं:

"मुझे यह सौदा मन्ज़ूर है, आप लिखित संधि के लिए अपना सेक्रेटरी मेरे सेक्रेटरी के पास भेज दीजिए।"

ध्यान रहे इस्राईल उस समय आर्थिक तंगी का शिकार था, किन्तु गोल्ड अमाएर ने कितनी सादगी से इस्राईल के इतिहास में असलहे की ख़रीदारी का इतना बड़ा सौदा कर डाला। हैरत की बात यह है कि स्वयं इस्राईली काबीना ने इस भारी सौदे को रद्द कर दिया। उनका कहना था कि इस ख़रीद के बाद इस्राईली सेना को बरसों तक दिन में एक ही वक़्त के खाने पर संतोष करना पड़ेगा।

गोल्ड अमाएर ने कबीना के सदस्यों का पक्ष सुना और कहा:

"आपका सोचना ठीक है, लेकिन अगर हम ये जंग जीत गए और हमने अरबों को पस्पा होने पर मजबूर कर दिया तो इतिहास हमें विजयी कहेगा और इतिहास जब किसी क़ौम को विजयी घोषित करता है तो भूल जाता है कि जंग के दौरान विजयी क़ौम ने कितने अन्डे खाए थे और रोज़ाना कितनी बार खाना खाया था। इसके दस्तरख़्वान पर शहद, मक्खन था या नहीं और आप के जूतों में कितने सूराख़ थे या उनकी तलवारों की म्यान फटी हुई थी। विजयी केवल विजयी होता है।

गोल्ड अमाएर की दलील में वज़न था। अतः इस्राईली काबीना को इस सौदे को मन्ज़ूरी देना पड़ी। आने वाले समय ने साबित कर दिया कि गोल्ड अमाएर का क़दम कितना ठीक था और फिर दुनिया ने देखा कि इसी असलहे और जहाज़ो से यहूदी अरबों के दरवाज़ों पर दस्तक दे रहे थे। जंग हुई और अबर एक बूढी औरत से पराजित हो गए।

जंग के एक अर्से के बाद वाशिंगटन पोस्ट के नुमाइन्दे ने गोल्ड अमाएर का इन्टरव्यू लिया और सवाल किया, "अमरीकी हथियार ख़रीदने के लिए आपके दिमाग़ में जो दलील आयी थी वह फ़ौरन आपके दिमाग़ में आयी थी या पहले से आप युद्ध प्रणाली तैयार कर रही थीं?" गोल्ड अमाएर ने जो जवाब दिया वह चौंका देने वाला था। वह बोली, "मैनें यह दलील अपने दुश्मन मुसलमानों के नबी (स0अ0) से लिया था। जब मैं पढ़ती थी तो धर्मों के बीच तुलना करना मेरा पसंदीदा कार्य था। उन्हीं दिनों मैंने मुहम्मद (स0अ0) की जीवनी पढ़ी, उस किताब के लेखक ने एक जगह लिखा था कि जब हज़रत मुहम्मद (स0अ0) का इन्तिक़ाल हुआ तो घर में इतनी रक़म भी नहीं थी कि चिराग़ जलाने के लिए तेल ख़रीदा जा सके अतः उनकी धर्मपत्नी हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 ने उनकी ज़िरह रेहन करके तेल ख़रीदा लेकिन उस वक़्त भी मुहम्मद (स0अ0) के हुजरे की दीवारों पर तलवारे लटक रही थीं।

मैंने जब यह वाक़्या पढ़ा तो मैने सोचा कि दुनिया में कितने लोग होंगे जो मुसलमानों की पहले के साम्राज्य की कमज़ोर अर्थव्यवस्था के बारे में जानते होंगे लेकिन मुसलमान आधी दुनिया के विजयी हैं, यह बात पूरी दुनिया जानती है। अतः मैंने यह निर्णय लिया कि अगर मुझे और मेरी क़ौम को बरसों भूखा रहना पड़े, पक्के मकानों के बजाए ख़ेमों में जीवन व्यतीत करना पड़े, तो भी हथियार ख़रीदेंगे, ख़ुद को मज़बूत साबित करेंगे और विजयी होने का सम्मान पायेंगे। .....(शेष पेज 15 पर)

मुहर्रमुल हराम और ताज़ियादारी इमामों और बुज़ुर्गों के फ़तवे

अल्लामा इब्ने तैमिया रह0 का फ़तवा:

आशूरा (दसवीं मुहर्रम) के दिन मातम व नौहा की बिदअत जो मुंह पीटने और वावेला मचाने और रोने–धोने और मर्सिया पढ़ने से मनायी जाती है। बुजुर्गों पर बदज़बानी और लानत मलामत यहां तक कि सहाबा किराम रज़ि0 से भी दुश्मनी की जाती है।

(मिन्हाजुस्सुन्नहः 2/240)

हज़रत शेख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रह0 का फ़तवा:

अगर हज़रत हुसैन रज़ि0 की शहादत वाले दिन को ग़म का दिन कहना जायज़ होता तो उससे कहीं ज़्यादा हक़दार दोशम्बे का दिन है। इसी दिन आप स0अ0 और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने वफ़ात पायी।

(गुनयतुत्तालिबीनः 2/72)

इमाम ग़ज़ाली रह0 का फ़तवा:

वक्ता हो या कोई भी उसके लिये केवल हज़रत हुसैन रज़ि0 की शहादत घटना को बयान करना हराम है। इसी तरह सहाबा रज़ि0 में से जो आपसी मतभेद हुआ उसको भी बयान करना ठीक नहीं है क्योंकि ये बातें सहाबा किराम रज़ि0 के साथ नफ़रत पैदा करती हैं।

(अहयाउल उलूम)

हज़रत शाह वली उल्लाह मुहद्दिस देहलवी का फ़तवा:

ऐ बनी आदम! तूने ऐसी झूठी रस्में अपना ली हैं जिससे दीन बदल गया है। जैसे आशूरा के दिन जमा होकर बेकार की हरकते करते हो। एक जमाअत ने उस दिन को ग़म का दिन बना रखा है। क्या तुम नहीं जानते कि ये सब दिन अल्लाह के हैं और सारे हादसे अल्लाह के हुक्म से होते हैं। अगर हज़रत हुसैन रज़ि0 इस रोज़ शहीद किये गये तो और कौन सा दिन है जिसमें अल्लाह के महबूब की मौत न हुई हो। (तजदीदे अहयाए दीनः 96)

शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी रह0 का फ़तवा:

मुहर्रम की मजलिसो और ताज़िया की ज़ियारत (देखने) और रोने धोने के लिये जाना ठीक नहीं। क्योंकि वहां कोई ज़ियारत नहीं होती और ताज़िये जो बनाये जाते हैं वे ज़ियारत के लायक़ नहीं बल्कि तोड़ कर फेंक देने के लायक़ हैं। (फ़तावा अज़ीज़ियाः जिल्द 1)

मौलाना अब्दुल हयि फ़रंगी महली रह0 का फ़तवा:

ताज़िया बनाना, अलम रखना, सीना पीटना, मलीदा और शरबत ताज़िये के सामने रखना उस पर नज़र व नियाज़ देना और उसको तबर्रुक समझ कर खाना–पीना ये सब काम बिदअत और मना हैं। इसका करने वाला गुनहगार है। (फ़तावा अब्दुल हयिः 1/106)

मुफ़्ती किफ़ायतउल्लाह साहब रह0 का फ़तवा:

ताज़िया बनाना, उसकी ताज़ीम करना, उससे मन्नत व मुरादें मांगना, चूमना, अलम निकालना, दुलदुल बनाना, तख़्त उठाना, मेंहदी लगाना, मर्सिया पढ़ना, मातम और नौहा करना, छातियां पीटना ये सब काम नाजायज़ और हराम और शिर्क के बराबर हैं। शरीअते पाक में ऐसे कामों की इजाज़त नहीं। ये इस्लामी तौहीद और पैग़म्बर स0अ0 की सही और सच्ची तस्वीर के ख़िलाफ़ है।

(किफ़ायतुल मुफ़्तीः 1/238)

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह0 का फ़तवा:

ताज़ियादारी और मर्सिया पढ़ना ये तो पता नहीं कि शुरूआत किसकी है फिर भी तैमूर की तरफ़ निस्बत करते हैं। मगर रस्म शिया की है और बुरी बिदअत में से है और बिदअत के उदाहरणों में से है। (इमदादुल फ़तावाः 5/294)

मुफ़्ती मुहम्मद हसन साहब गंगोही रह0 का फ़तवा:

मुहर्रम के महीने में ताज़िया अलम के साथ निकालना और उसके साथ मर्सिया पढ़ना और जुलूस के साथ शरीक होना और नज़रे हुसैन की सबील निकालना, उसका पीना और पिलाना और उसको सवाब समझना, ये सारे काम बिदआत व नाजायज़ हैं और राफ़िज़ियों के काम हैं। उनमें शिरकत करना नाजायज़ है।

(फ़तावा महमूदियाः 1/188)

मुफ़्ती रशीद अहमद साहब का फ़तवा:

मुहर्रम के दस दिनों में मुसलमानों की ज़्यादातर संख्या मातम की मजलिस और ताज़िया का जुलूस देखने के इंतिज़ार में जमा हो जाती है। इसमें कई गुनाह हैं एक ये कि इसमें सहाबा और कुरआन के दुश्मनों के साथ शबीह है। दूसरा गुनाह ये कि इससे इस्लाम दुश्मनों की रौनक़ बढ़ती है। दुश्मनों की रौनक़ बढ़ाना बहुत बड़ा गुनाह है। तीसरा गुनाह ये है कि जिस तरह इबादत को देखना इबादत है उसी तरह गुनाह को देखना भी गुना है।

(अहसनुल फ़तावा: 1/394)

अहमद रज़ा ख़ाँ साहब के फ़तवे:

1– ताज़िया अपनी हर तरह की रायज शक्ल में बिदअत है। इसका बनाना, देखना जायज़ नहीं और ताज़ीम व अक़ीदत सख़्त हराम व बिदअत है। अल्लाह तआला मुसलमान भाइयों को सीधी राह की हिदायत फ़रमाये। आमीन! (फ़तावा रिज़विया: 24/499)

2– ताज़िया मना है। शुरू में कुछ अस्ल नहीं और जो कुछ बिदआत उसके साथ की जाती हैं सख़्त नाजायज़ हैं। (फ़तावा रिज़विया: 24/499)

3– ढोल बजाना हराम और जिस रात का नाम ख़ुदाई रात उनमें बजाए इबादत के गुनाह और मासियत करना मानो गुनाह को माज़ अल्लाह इबादत ठहराना है और ये और ज़्यादा हराम है। (फ़तावा रिज़विया: 24/491)

4– पाइक बनना, नक़ल करना और बेहूदा बात है। फ़क़ीर बनकर बिना ज़रूरत भीख मांगना हराम है और ऐसों को देना भी हराम है। (फ़तावा रिज़विया: 24/494)

5– मातम करना, छाती पीटना भी हराम है। अलम, ताज़िये, बाजे, खेल–तमाशे, सब बेहूदा बिदअत और मना हैं। (फ़तावा रिज़विया: 24/496)

6– अलम, ताज़िये, मेंहदी, उनकी मन्नत, गश्त, चढ़ावा, ढ़ोल–ताशे, मजीरे, मर्सिये, मातम, बनावटी कर्बला को जाना, औरतों का ताज़िये देखने को निकलना, सब बातें हराम व गुनाह, नाजायज़ व मना है।

(फ़तावा रिज़विया)

7– अलम, ताज़िया, बैरक़, मेंहदी, जिस तरह रायज हैं बिदअत हैं और बिदअत से शौकत–ए–इस्लाम नहीं होती। ताज़िये को मुश्किल कुशा यानि परेशानियों को दूर करने वाला समझना जिहालत पर जिहालत है और इससे मन्नत मांगना और न मानने को नुक़सान की वजह समझना वहम है। मुसलमानों को ऐसी हरकत व ख़्याल से दूर रहना चाहिये। (फ़तावा रिज़विया: 24/499)

8– ताज़िया नाजायज़ व बिदअत है और इसको बनाना गुनाह है और इस पर शीरीनी वग़ैरह चढ़ाना केवल जिहालत और इसकी ताज़ीम बिदअत और जिहालत है। और जो ताज़िये को नाजायज़ कहे उसकी वजह से उसे काफ़िर या मुरतद कहना बहुत बड़ा गुनाह है।

(फ़तावा रिज़विया: 24/500)

9– आशूरा की रात को रोशनी करना बिदअत व नाजायज़ है। (फ़तावा रिज़विया: 24/501)

10– ताज़िया पर फ़ातिहा जिहालत, बेवकूफ़ी और बेकार है। (फ़तावा रिज़विया: 24/501)

11– ताज़िया नाजायज़ है और ऐसी मजलिस में जिसमें माज़ अल्लाह अहले बैत की तौहीन हो हराम है और उसमें शिरकत करना नाजायज़ व हराम है।

(फ़तावा रिज़विया: 24/507)

12– ऐसी मजलिसों में शरीक होना जिसमें मर्सिया इत्यादि होते हैं हराम है। (फ़तावा रिज़विया: 24/509)

13– खिचड़े के बारे में लिखा है "हां जो उसे शरई तौर पर सही समझे वो ग़लत है।"

(फ़तावा रिज़विया: 24/494)

14– ताज़िया बना कर निकालना, उसके साथ ढोल–नक़्क़ारे बजाना, क़ब्र की सूरत बनाकर जनाज़े की तरह निकालना, उस पर फूल वग़ैरह चढ़ाना ये सब बातें नाजायज़ हैं। (फ़तावा रिज़विया: 24/507)

15– ताज़िया जिस तरह रायज है ज़रूर बुरी बिदअत है। जिस क़द्र बात सुल्तान तैमूर ने की कि रौज़ाए मुबाकर हज़रत इमाम रज़ि0 की सही नक़ल, शौक़ को पूरा करने को रखी वो ऐसी थी जिसे रौज़ाए मुनव्वरा व काबा मुअज़्ज़मा के नक़्शे उस वक़्त तक इतने हरज में न था। अब शिया की शबीह की कारण से इसकी भी इजाज़त नहीं।

ये जो बाजे–ताशे, मर्सिये, मातम, बर्क़ परी की तस्वीरें,

ताज़िये से मुरादें मांगना, उसकी मिन्नते मानना, उसे झुक–झुक कर सलाम करना, सजदा करना वग़ैरह बहुत बड़ी–बड़ी बिदअतें इसमें में हो गयी है और अब इसी का नाम ताज़िया दारी है। (फ़तावा रिज़वियाः 24/504)

16– मुहर्रम शरीफ़ में सोग करना हराम है।

(इरफ़ान–ए–शरीअतः 1/7)

17– मुहर्रम शरीफ़ में मर्सिया पढ़ने में शिरकत करना नाजायज़ है। (इरफ़ाने शरीअतः 1/16)

शेष : इतिहास विजय गिनता है .....

गोल्ड अमाएर ने तो इस वास्तविकता से पर्दा उठाया मगर साथ ही इन्टरव्यू लेने वाले से विनती की कि उसे "आफ़ दी रिकार्ड" रखा जाए और इसे प्रकाशित न किया जाए। कारण यह था कि मुसलमानों क`नबी हज़रत मुहम्मद स0अ0 का नाम लेने से जहां उनकी क़ौम ख़िलाफ़ हो सकती है वहां दुनिया के मुसलमानों का पक्ष को ताक़त मिलेगी। इसीलिए वाशिंगटन पोस्ट के अधिकारी ने यह घटना हटा दी। फिर धीरे–धीरे समय बीतता गया यहां तक कि गोल्ड अमाएर की मृत्यु हो गयी और वह पत्रकार भी पत्रकारिता के कामों से अलग हो गया। उस समय एक और पत्रकार अमरीका के बीस बड़े लोगों के साक्षात्कार लेने में व्यस्त था। इस क्रम में वह उसी पत्रकार का इन्टरव्यू लेने लगा जिसने वाशिंगटन पोस्ट के प्रतिनिधी की हैसियत से गोल्ड अमाएर की घटना बयायन कर दिया जो सीरत–ए–नबवी स0अ0 से संबंधित था। उसने कहा "उसे अब यह घटना बयान करने में कोई शर्मिन्दगी महसूस नहीं हो रही है।"

गोल्ड अमाएर का साक्षात्कार लेने वाले ने आगे कहा, "मैंने इस घटना के बाद जब इस्लाम के इतिहास का अध्ययन किया तो मैं अरब बद्दुओं की जंगी कार्यप्रणालियां देखकर हैरान रह गया। क्योंकि मुझे मालूम हुआ कि वह तारिक़ बिन ज़ियाद जिसने जिब्राल्टर के रास्ते स्पेन को विजय किया था उसकी फ़ौज के आधे से ज़्यादा मुजाजिदों के पास पूरा लिबास नहीं था। वे 72–72 घन्टे थोड़े से पानी और सूखी रोटी के कुछ टुकड़ों पर गुज़ारा कर लेते थे। यह वह अवसर था जब गोल्ड अमाएर का इन्टरव्यू लेने वाला क़ायल हो गया कि इतिहास विजय गिनता है, दस्तरख़्वान पर पड़े अन्डे, जैम और मक्खन नहीं।

शेष : असहाब–ए–रसूल की कुछ विशेष विशेषताए

"मुझे इस बात का पता चला है कि तुम सीमा पर सेना के द्वारा चढ़ाई करना चाहते हो। याद रखो! अगर तुमने ऐसा किया तो मैं अपने साथी (हज़रत अली) से सुलह कर लूंगा और उनका जो लश्कर तुमसे लड़ने के लिए रवाना होगा उसमें शामिल होकर कुस्तुनतुनिया को जला हुआ कोयला बना कर रख दूंगा।"

जब यह ख़त रोम के बादशाह के पास पहुंचा तो उसने अपना इरादा छोड़ दिया और हमला करने से रुक गया क्योंकि वह जानता था कि ये लोग कुफ़्र के मुक़ाबले में अब भी एक जिस्म व जान की तरह हैं और उनका मतभेद राजनेताओं का मतभेद नहीं है।

हज़रत हसन रज़ि0 ने हज़रत अली रज़ि0 की मृत्यु के बाद ख़लीफ़ा बनने के कुछ दिनों के बाद ख़िलाफ़त केवल इसलिए छोड़ दी कि एकता स्थापित की जा सके और उम्मत एक हो जाए। हज़रत अमीर मुआविया रज़ि0 ने जो बात रोम के बादशाह को कहलायी थी कि हज़रत अली के लश्कर के एक सिपाही के रूप में आएंगे, हज़रत हसन रज़ि0 ने हज़रत अमीर मुआविया रज़ि0 को अमीर स्वीकार करके अमली तौर पर स्वयं उसे करके दिखा दिया।

सहाबा कि विशेषता थी कि अल्लाह की रज़ा को पाने के लिए एक दूसरे से आगे बढ़ने वाले और आपस में एक दूसरे से बड़ी मुहब्बत व संबंध रखने वाले थे।

इन्सान के सुधार व प्रशिक्षण हमेशा नबियों और रसूलों की प्राथमिकता रही और तौहीद व ईमान की दावत के साथ उन्होंने ज़माने का जो बड़ा मर्ज़ और व्यवहारिक बुराई रही है, इसको भी उन्होंने विषय बनाया, आख़िरी नबी मुहम्मद स0अ0 किसी एक ज़माने और क़ौम के लिए नहीं आए थे। सम्पूर्ण मानवता के लिए और हमेशा हमेश के लिए थी। इसीलिए हुज़ूर स0अ0 की शिक्षाओं का दायरा अधिक वृहद है और हर युग में इसे आगे बढ़ाने का काम उलमा, सुधारको, विजय पताका फहराने वालो, मुजाहिदों और दीन के दूसरे ख़ादिमों और सेवको ने अन्जाम दिया और सुधार का काम बिना रुके जारी है।

जन्नती शहीद

अरमुग़ान कुकरालवी नदवी

हदीसः हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः जन्नत में दाख़िल होने के बाद कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं जो दुनिया में वापिस आने की इच्छा करेगा, न ही उसके लिए ज़मीन में कोई काम की चीज़ होगी, सिवाए शहीद के, बेशक वह यह तमन्ना करेगा कि वापिस हो और दसियों बार क़त्ल किया जाए, इस वजह से जो अल्लाह की ओर से वह सम्मान देखेगा।

फ़ायदाः अल्लाह के रास्ते में उसके दीन की सरबुलन्दी के लिए अपनी जान कुर्बान करने वाले को "शहीद" कहते हैं। कुरआन व हदीस में ऐसे व्यक्ति के बारे में बहुत से फ़ज़ाएल बयान किए गए हैं। नबियों व सच्चे लोगों के बाद शहीदों के स्थान को बताया गया है। शहादत की मौत नसीब होने वाले को "ज़िन्दा" शब्द से याद किया गया है। अल्लाह तआला का इरशाद हैः "और जो अल्लाह के रास्ते में मारे गए उनको मुर्दा मत कहो बल्कि (वे) ज़िन्दा हैं अलबत्ता तुम महसूस नहीं करते।" (सूरह बक़रहः 154) अल्लाह की राह में शहीद की महानता का अन्दाज़ा इन हदीसों से बखूबी किया जा सकता है। रसूलुल्लाह स0अ0 का कथन हैः "शहीद के खून की बूंद ज़मीन पर गिरने से पहले ही उसके गुनाहों को बख़्श दिया जाता है।" एक सही रिवायत में आता है कि "अल्लाह की राह में जिहाद करने वाला अगर मर जाए तो अल्लाह उसके लिए जन्नत का ज़िम्मेदार है।" अबूदाऊद की रिवायत में है, "नबी जन्नत में होगा, और शहीद भी जन्नत में होगा।"

हदीस की किताबों में अल्लाह की राह में जान देने वालों के अलावा कुछ और लोगों को भी शहीद बताया गया है। अबूदाऊद की रिवायत में आता है कि शहीद सात प्रकार के हैंः

1– वह व्यक्ति जो किसी आम बीमारी के फैल जाने के कारण मर जाए।

2– वह व्यक्ति जिसकी मृत्यु किसी नेक इरादे से समन्दरी सफ़र करते हुए हो जाए।

3– वह व्यक्ति जिसको ऐसा नासूर बन गया हो जिसकी वजह से मौत हो जाए।

4– वह व्यक्ति जिसकी पेट के दर्द में मृत्यु हो जाए।

5– वह व्यक्ति जो आग में जलने की वजह से मर जाए।

6– वह व्यक्ति जिसकी मौत मकार गिरने के कारण हो जाए।

7– वह औरत जो गर्भावस्था में मर जाए।

इसी प्रकार एक दूसरी रिवायत में उस व्यक्ति को भी शहीद बताया गया है जो अपने माल और अपने घरवालों की रक्षा करते हुए मार दिया जाए। ध्यान रहे कि अल्लाह के रास्ते में शहीद होने के अलावा यह सभी क़िस्में हुक्मी हैं यानि इस हालत में मरने वाले लोगों का अज्र व सवाब शहीद के बराबर होगा। यद्यपि वास्तविक शहीद के अलावा इन शहीदों के साथ कफ़द–दफ़न में वही हुक्म जारी होंगे जो आम मरने वालों के साथ होते हैं।

कुरआन व हदीस में अल्लाह की राह में सच्ची नियत के साथ जिहाद करने वाले और शहीद के बारे में जहां अत्यधिक फ़ज़ीलतें बतायी गयीं हैं, वहीं ग़लत नियत रखने वालों के बारे सख़्त बातें भी बतायी गयीं हैं, रसूलुल्लाह स0अ0 का इरशाद हैः "जो शख़्स सभी बुराइयों से दूर रहकर अल्लाह के लिए जिहाद करेगा, उसका सोना और जागना सब इबादत है, लेकिन जो शख़्स धमन्ड व नाम व शोहरत के लिए लड़े तो उसको कुछ भी हासिल होने वाला नहीं है।" इसीलिए ऐसे व्यक्ति के बारे में आता है कि ''उसको घसीट कर जहन्नम में डाल दिया जाएगा।'' एक मौक़े पर सहाबा किराम रज़ि0 आप स0अ0 से ऐसे व्यक्ति के बारे में मालूम किया जो अल्लाह की राह में सच्ची नियत के साथ लड़ता हो मगर कुछ नियत दुनिया की भी रखता हो, तो आप स0अ0 ने फ़रमाया कि ''ऐसे शख़्स के लिए कोई अजर न होगा।''

अस्ल शहीद के बारे में बताते हुए आप स0अ0 ने फ़रमाया, ''जिसने अल्लाह तआला से सच्ची नियत के साथ शहादत की दुआ की, अल्लाह उसको शहीद का मर्तबा अता फ़रमाएगा, चाहे वह अपने बिस्तर पर ही क्यों न मरे।''

इससे साफ़ हो गया कि शहादत को पाने के लिए सच्ची नियत बड़ी कारगर है और यह भी मालूम हुआ कि हममें से हर व्यक्ति को इस असाधारण स्थान को पाने के लिए नियत रखना चाहिए, चाहे ऐसा मुबारक मौक़ा नसीब न हो, अल्लाह की रहमत से उम्मीद है कि उस सच्ची नियत का बदला नबियों, सच्चे लोगों और शहीदों के साथ हमारा ठिकाना भी जन्नत में होगा।

मिस्र
सैन्य क्रान्ति के दो साल बाद

ख़लील अहमद हसनी नदवी

मिस्र में सैन्य क्रान्ति हुए दो साल का समय बीत चुका है। दो साल के इस समय में मिस्र की आर्थिक स्थिति किस हद तक बिगड़ चुकी है? मानवाधिकारों का हनन कहां तक पहुंच गया है? अशांति और अव्यवस्था ने लोगो के जीवन को कितना मजबूर कर रखा है? इसका कुछ अन्दाज़ा मिस्र की संसद द्वारा तय की गयी एक टीम की रिपोर्ट के द्वारा लगाया जा सकता है।

रिपोर्ट के अनुसार 7000 लोग शांति पूर्ण विरोध प्रदर्शनो में सेना की गोलियों का निशाना बन कर अपने जीवन से हाथ धो बैठे। 50000 निर्दोष नागरिक जेल की सलाखों के पीछे डाल दिए गए। सेना ने अपने इस अभियान में पूर्व राष्ट्रपति मुर्सी के समर्थकों और उनके विरोधियों के बीच कोई फ़र्क़ नहीं किया। सेना ने हर उस नागरिक को निशाना बनाया जो सैन्य शासन की पॉलिसियों के ख़िलाफ़ विरोध कर रहे थे। सेना की हिंसात्मक कार्यवाहियों का हाल यह था कि उसने सारे नियमों को ताक़ पर रख दिया और औरतों, बच्चों और छात्रों को भी नहीं बख़्शा। अपोज़ीशन के नेताओं की सम्पत्तियां ज़ब्त कर लीं, उनके अस्पतालों को अपनी कस्टडी में ले लिया, उनके स्कूलों और कॉलिजो में ताला लगा दिया, उनकी कम्पनियों को सील कर दिया, अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को जुर्म घोषित करके उनको चुप रहने पर मजबूर कर दिया।

सेना की इस हिंसा से वकील तक सुरक्षित नहीं रह सके अब तक सेना ने 236 वकीलों को गिरफ़्तार करके जेल भेज दिया है।

सेना के क़हर का शिकार दूसरों की तरह प्रेस रिपोर्टर्स भी हुए। दस पत्रकारों को फ़ौजी शासन के विरोध पर अपनी जान गंवानी पड़ी। 4 सेटेलाइट चैनल बन्द कर दिए गए। 4 आफ़िसों पर अचानक छापा मारा गया, तलाशी ली गयी और 30 रिपोर्टर्स को नौकरी से हाथ धोना पड़ा। दूसरे पत्रकारों को स्क्रीन पर आने से और न्यूज प्रस्तुत करने से रोक दिया गया और लगभग 150 प्रेस रिपोर्टर्स की गिरफ़्तारी हुई।

एक स्थान पर एकत्र होकर राय की आज़ादी का सहारा लेकर शांतिपूर्ण प्रदर्शन करने वालों और उसकी पॉलिसियों पर टिप्पणी करने वालों का सेना ने बेरहमी से क़त्ल–ए–आम किया। सितम पर सितम यह कि जजों ने भी अपने हाथ खून से रंगीन किए और सेना की गोली से बच गए लोग जजों के अन्यायपूर्ण फ़ैसलों से अपने आप को नहीं बचा सके। हालिया प्रदर्शनों के दौरान गोली का निशाना बनकर मौत की गोद में सोने वाले लोगों की संख्यां लगभग 500 है। जख़्मियों की संख्यां लगभग 10000 है। पकड़े गए लोगो की संख्या 50000 है और वांछित लोगो की संख्या में 65000 नाम हैं।

सत्ता के नशे में चूर सेना ने औरतों को भी नहीं छोड़ा, बिना किसी जुर्म के उनको जेलों में डाल दिया, जहां उनको शारीरिक शोषण का सामना करना पड़ा। सेना ने अपने इस घिनावने जुर्म में उम्र दराज़ औरतों और छोटे–छोटे बच्चों को भी नहीं बख्शा। बल्कि इसका ज़्यादातर शिकार स्टूडेन्ट लॉबी बनी। 164 स्टूडेन्डस को नज़रबन्द किया गया और सुरक्षा बलों को यूनिवर्सटियों में तैनात कर दिया गया जिसने अपने अधिकारों का ग़लत फ़ायदा उठाया और 110 अध्यापकों को शहीद कर दिया गया। 30 अध्यापकों को पद निवृत कर दिया गया और 150 अध्यापकों को संस्पेंड कर दिया गया।

हैरत की बात तो यह है कि जनता की ओर से चुने गए और क्रान्ति के द्वारा संसद में पहुंचे सदस्य भी इनसे नहीं बचे हैं। उनको भी ज़ालिमाना फ़ैसलों का सामना करना पड़ा उनमें वे भी है जिनको फ़ांसी की सज़ा सुनाई गयी, जैसे नासिर अलहाफ़ी और वे भी हैं जिनको मेडिकल सर्टिफ़िकेट के द्वारा अपाहिज घोषित कर दिया गया जैसे फ़रीद इस्माईल।

सैन्य क्रान्ति के बाद मिस्र की अर्थव्यवस्था में लगातार गिरावट आती रही। ग़रीबों के बजाए अमीरों को छूट दी जा रही है। संभावना है कि अर्थव्यवस्था में और अधिक गिरावट आएगी। क़त्ल व लूटपाट का नंगा नाच अभी और होगा इसलिए कि एक ख़राबी दस ख़राबियों को जन्म देती है।

इन आकड़ों की रोशनी में मिस्र की गिरती अर्थव्यवस्था का ख़ूब अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। उम्मीद थी कि क्रान्ति का लाभ ग़रीब जनता को मिलेगा लेकिन परिणाम उसक विपरीत सामने आ रहे हैं। उन पर कल भी सितम हो रहा था और आज भी सितम हो रहा है।

नमाज़ के फ़राएज़

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

पहले बताया जा चुका है कि नमाज़ के फ़र्ज़ दो तरह के हैं, एक वे जिनका करना नमाज़ की सिम्त के लिए ज़रूरी होता है लेकिन वे नमाज़ से बाहर की चीज़ें होती हैं, जैसे वुज़ू और नियत इत्यादि, उनको नमाज़ की शर्तें कहा जाता है और उन पर हम पिछले अंक में विस्तार से चर्चा कर चुके हैं। दूसरे फ़र्ज़ वे हैं जो नमाज़ के अन्दर की चीज़ें होती हैं, जैसे रुकुअ व सज्दा इत्यादि, उनको नमाज़ का हिस्सा कहा जाता है और आम तौर पर जब नमाज़ के फ़र्ज़ की बात की जाए तो उससे मुराद यही चीज़ें होती हैं। नीचें हम उन्हीं फ़र्जों की चर्चा कर रहे हैं।

नमाज़ में छः चीज़ें फ़र्ज़ हैं

1– तकबीर–ए–तहरीमा कहना, यानि नमाज़ शुरू करते वक़्त "अल्लाहु अकबर" कहकर नमाज़ शुरू करना। तकबीर–ए–तहरीमा अस्ल में नमाज़ की शर्तों में से है, लेकिन नमाज़ से लगी हुई होने की वजह से इसका ज़िक्र यहां भी कर दिया गया। 2– फ़र्ज़, वाजिब और नज़र की नमाज़ों में क़याम करना। 3– फ़र्ज़ की पहली दो रकआतों और फ़र्ज़ के अलावा बक़िया नमाज़ों की तमाम रकआतों में कुरआन की तिलावत करना। 4– रुकुअ करना।

5– सज्दा करना। 6– तश्हद पढ़ने के बराबर क़ादा आख़िर में बैठना। (हिन्दिया)

तकबीर–ए–तहरीमा का हुक्म ख़ुद कुरआन मजीद में आया है, इरशाद हैः "और अपने रब ही की बड़ाई बयान कीजिए।" (सूरह मुदस्सिरः 03)

हदीस में और अधिक स्पष्ट रूप से कहा गया हैः "हज़रत अली रज़ि0 रिवायत करते हैं कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमायाः नमाज़ की कुन्जी पाकी है और उसकी तहरीमा तकबीर।" (अबूदाऊद, तिरमिज़ी)

इस तकबीर को तहरीमा इसलिए कहते हैं कि इसके कह लेने के बाद आदमी नमाज़ में दाख़िल हो जाता है और बहुत सी चीज़ें जो नमाज़ के बाहर जायज़ थी, जैसेः बात करना, या अमल–ए–कसीर इत्यादि, इसलिए तहरीमा में माने ही किसी चीज़ को हराम कर देने के हैं।

तकबीर–ए–तहरीमा के कुछ ज़रूरी मसले

1– "अल्लाहु अकबर" सही सही कहने का अभ्यास किसी जानकार से ज़रूर करा लेना चाहिए, इसलिए कि अगर "अल्लाह" के अलिफ़ को खींचकर "आल्लाहु अकबर" कह दिया तो उसके माने सवाल के हो जाएंगे कि "क्या अल्लाह बड़ा है" यही हाल उस वक़्त होगा जब "अकबर" के अलिफ़ को खींचकर "आकबर" कहा जाए, इस तरह कहने से तहरीमा सही नहीं होगी और जब तहरीमा सही नही होगी तो नमाज़ की शुरूआत ही नहीं हो जाएगी। इसलिए बहुत ध्यान देने की आवश्यकता है। इसी तरह "अकबर" कहते समय "बा" या "रा" के बीच अलिफ़ बढ़ाकर "आकबार" कहा जाए तो भी माने में बहुत ख़राबी आती है और नमाज़ की शुरूआत ही नहीं हो पाती। बल्कि नमाज़ के बीच में भी तकबीर कहते वक़्त यह ग़लती हो जाए तो नमाज़ ख़राब हो जाती है और जानबूझ कर ऐसा करना बहुत गुनाह का काम है। फ़ुक़्हा ने तो यहां तक लिखा है कि इससे कुफ़्र का ख़तरा है। (शामी)

2– जब नमाज़ इमाम के साथ पढ़ रहा हो तो इमाम के तहरीमा कहने के बाद तहरीमा कहना अफ़्ज़ल है। साथ–साथ तहरीमा कहे तब भी सही है। लेकिन अगर इमाम से पहले तहरीमा कह लिया तो उसको नहीं माना जाएगा, फिर से तहरीमा कहे वरना नमाज़ सही नहीं होगी, यहां तक कि अगर "अल्लाह" इमाम के साथ कहा और "अकबर" इमाम से पहले कह दिया तो भी नमाज़ की शुरूआत सही नहीं होगी, फिर से तहरीमा कहना होगा। (शामी)

3– तकबीर–ए–तहरीमा खड़े होने की हालत में कहना ज़रूरी है। अतः अगर कोई बैठ कर तहरीमा कहे फिर खड़ा हो जाए तो नमाज़ सही नही होगी। यहां तक कि अगर इमाम रुकुअ में हो तो तहरीमा खड़े होकर कहे फिर रुकुअ में जाए, वरना अगर रुकुअ की हालत में तहरीमा कहा या अल्लाह तो खड़े होकर कहा लेकिन

अकबर रुकुअ की हालत में कहा तो नमाज़ सही नहीं होगी। अल्बत्ता यह हुक्म उन्हीं नमाज़ों के लिए है जिनमें क़याम फ़र्ज़ है, नफ़िल नमाज़ बैठ कर पढ़ना जाएज़ है, तो इसमें तहरीमा भी बैठकर पढ़ना जायज़ है, यही हुक्म बीमार की नमाज़ का भी है। (हिन्दिया)

क़याम का हुक्म

क़याम (खड़े होने) का हुक्म ख़ुद कुरआन मजीद में दिया गया है, इरशाद है:

"तमाम नमाज़ों (ख़ास तौर से) दरमियानी नमाज़ों की अच्छी तरह देख रेख रखो और अल्लाह के लिए अदब से खड़े हुआ करो।" (सूरह बक़रहः 238)

और हज़रत इमरान बिन हसीन रज़ि0 से रिवायत है फ़रमाते हैं: मुझे बवासीर की बीमारी थी तो मैंने नबी करीम स0अ0 से नमाज़ों के बारे में पूछा तो आप स0अ0 ने फ़रमायाः खड़े होकर पढ़ो, अगर इसकी ताक़त न हो तो बैठ कर पढ़ो और अगर इसकी भी ताक़त न हो तो पहलू के बल लेट कर पढ़ो। (बुख़ारी)

नमाज़ में क़याम करना फ़र्ज़, वाजिब (जैसे वित्र और नज़र नमाज़ें) और एक कथन के अनुसार फज्र की सुन्नत में फ़र्ज़ है। शर्त यह है कि विकलांग न हो। अगर कोई विकलांग हो तो उसे यह नमाज़े बैठकर या लेट कर पढ़ना जाएज़ है। जैसा कि ऊपर हदीस में गुज़र चुका है जहां तक नफ़िल नमाज़ों का संबंध है तो उनको कोई कारण न होने पर भी बैठ कर पढ़ा जा सकता है, लेकिन अकारण बैठकर पढ़ने की हालत में सवाब आधा हो जाएगा। (शामी)

इसीलिए हदीस शरीफ़ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 रिवायत करते हैं कि नबी करीम स0अ0 ने फ़रमायाः आदमी का बैठ कर नमाज़ पढ़ना आधी नमाज़ है। (बुख़ारी, मुस्लिम)

और क़याम की हद यह है कि हाथ फैलाने से घुटने पर न पड़ें, वरना क़याम सही नहीं होगा। (इल्ला यह कि बीमार हो) (शामी)

किरत का हुक्म

1– नमाज़ में किरात का हुक्म मजीद से साबित है, इरशाद है: "बस आप जो आसानी से हो सके कुरआन पढ़ लिया करो।"

2– क़िरात का फ़र्ज़ एक आयत पढ़ने से भी अदा हो जाता है। शर्त यह है कि कम से कम दो या उससे अधिक कलिमों वाली आयत हो। उससे छोटी आयत में फ़र्ज़ अदा न होगा। जहां तक वाजिब होने का संबंध है तो आगे आएगा कि सूरह फ़ातिहा पढ़ना अलग वाजिब है और उसके साथ तीन छोटी आयत का मिलाना अलग वाजिब है। किसी एक को भी जानबूझ कर छोड़ दिया जाए तो नमाज़ नहीं होगी। (हिन्दया)

3– वित्र और हर तरह की सुन्नत और नफ़िल नमाज़ों की हर रकआत में क़िरात फ़र्ज़ है जबकि फ़र्ज़ नमाज़ों मे अनिश्चित रूप से दो रकआत में क़िरात फ़र्ज़ है। (शामी)

4– गूंगा चूंकि किरात नहीं कर सकता, इसलिए वह पूरी नमाज़ ख़ामोश रहकर पूरी करेगा ओर उसके लिए होंटो को हरकत देना ज़रूरी नहीं है। जैसा कि बहुत से लोग कहते हैं। (शामी)

रुकुअ और सज्दे का हुक्म

रुकुअ और सज्दे का हुक्म कुरआन मजीद में जगह–जगह आया है। इरशाद है:

"ऐ ईमान वालो! रुकुअ और सज्दा करो।"

रुकुअ के शाब्दिक अर्थ पीठ मोड़ने के साथ–साथ सर झुकाने के हैं, लेकिन पूरी तौर पर रुकुअ यह है कि रीढ़ को इतना मोड़ा जाए कि सर सीरीन के बराबर आ जाए। अगर इतना कम मोड़ा की क़याम से क़रीब था तो क़याम सही नही होगा और अगर रुकुअ की हालत के क़रीब हो जाए तो रुकुअ हो जाएगा। (शामी)

जहां सजदों का संबंध है तो सज्दे का शाब्दिक अर्थ झुकने का है। लेकिन पूरा सज्दा वह है जिसमें सात अंग (माथा, नाक, दोनों पैर, दोनों हाथ और दोनो घुटने) टेके जाएं, उनमें से माथा या नाक रखना फ़र्ज़ है, दोनो हाथ और दोनो घुटने रखना सुन्नत है और दोनो पैरों का रखना फ़र्ज़ या वाजिब है। (किताबुल मसाएल)

जहां तक आख़िरी क़ादे का संबंध है तो उसकी फ़र्ज़ मिक़दार यह है कि इतनी देर बैठे जिसमें जल्दी–जल्दी अत्तहियात पढ़ना मुमकिन हो। (हिन्दिया)

इस्राईली अत्याचार

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

बीसवीं सदी के आरम्भ तक यहूदियों की हैसियत एक दर बदर भटकती क़ौम की तरह थी। उनकी मक्कार तबियत व साज़िशी ज़हन से पूरा यूरोप परिचित था। इसीलिए कोई भी देश उन्हें स्थायी रूप ठिकाना बनाने को तैयार न था। हर कोई उनसे बेज़ार था लेकिन उनका आर्थिक साम्राज्य और राजनीति पर उनकी पकड़ के कारण से कोई भी देश खुलकर उनके विरुद्ध कार्यवाही नहीं कर सकता था। यहूदी भी इस बात को अच्छी तरह समझते थे। और वे भी अपनी अलग रियासत के इच्छुक थे। इसी कारण से उन्होंने ठोस और मज़बूत कार्यप्रणाली बनायी और फ़िलिस्तीन के भौगोलिक महत्व को ध्यान में रखते हुए उस पर क़ब्ज़ा करने का प्रोग्राम बनाया। फिर 15 मई 1948 ई0 को फिलिस्तीन के हृदय में इस्राईल के नापाक अस्तित्व की घोषणा की गयी जिसे सयुंक्त राष्ट्र संघ ने स्वीकृति दे दी और यूरोप व अमरीका ने हर संभव सहयोग किया।

इस्राईल जब एक साम्राज्य की हैसियत से दुनिया के नक़्शे पर उभरा उस समय उसका कुल क्षेत्रफल केवल 5 हज़ार वर्गे मील था और यहूदियों की आबादी लगभग पांच लाख थी। जबकि वर्तमान समय में इस्राईल का क्षेत्र फल 34 हज़ार वर्ग मील हो चुका है और उसकी आबादी साठ लाख से भी ऊपर हो चुकी है।

सयुंक्त राष्ट्र संघ की मानवाधिकार संस्थाओं ने फ़िलिस्तीनियों पर इस्राईली अत्याचार को स्वीकार किया है और इस बात को भी स्वीकार किया है कि इस्राईल अन्तराष्ट्रीय क़ानूनों की पाबन्दी नहीं करता है लेकिन इस स्वीकार के बावजूद इस्राईल की केवल शब्दों ही में निंदा की जाती है जिससे अमली तौर पर इस्राईल के हमले भी कम नहीं पड़ते।

इस्राईली सेना के हाथों जहां एक ओर फ़िलिस्तीनी मर्द अत्याचार का शिकार हैं वहीं दूसरी ओर हज़ारों बेगुनाह औरतें भी उनके अत्याचार का शिकार हैं। उन्हें स्त्री होने की कोई छूट नहीं दी जाती है। उन्हें मर्दों के साथ एक ही बैरक में ठूस दिया जाता है जिनमें नई उम्र के बच्चे और बच्चियां भी शामिल होते हैं। इस तकलीफ़ को न बर्दाश्त करते हुए बहुत सी औरतें आत्महत्या का प्रयास भी करती हैं। लेकिन सहयूनी (यहूदी) दरिन्दों पर ज़रा भी फ़र्क़ नहीं पड़ता।

इन बेगुनाह लड़कों और लड़कियों को अलग–अलग बहानों से गिरफ़्तार किया जाता है, फिर उनकी रिहाई के बदले भारी जुर्माना वसूल किया जाता है, लेकिन अफ़सोस की बात यह है कि उन अत्याचारों से परिचत और विशेषतयः सोशल मीडिया के द्वारा पूरी जानकारी के बावजूद मानवाधिकार और स्त्री के अधिकारों के ठेकेदार ख़ामोश तमाशाई बने रहते हैं। जबकि अगर इसी प्रकार किसी कोई छोटी सी घटना किसी और देश में हो जाए तो ये संस्थाएं आसमान सर पर उठा लेती हैं। धरने देती हैं, रैलियां निकालती हैं और हर प्रकार की दुहाई देकर देश व हुकूमत को कार्यवाही करने पर मजबूर कर देती हैं।

फ़िलिस्तीन में बेगुनाह और मासूम बच्चों का खून बहाया जा रहा है लेकिन इस्राईल के अत्याचारों पर अन्तर्राष्ट्रीय बिरादरी की ज़बाने ख़ामोश हैं और सबसे बढ़कर सितम यह है कि उन अत्याचारों पर मुस्लिम शासक भी केवल बनावटी अफ़सोस ज़ाहिर करते हैं, कुछ मीटिंगे करते हैं, बयान देते हैं, सेमिनार आयोजित किए जाते हैं, और फिर ज़बानी विरोध के बाद सब ख़ामोश हो जाते हैं।

लेकिन वह समय भी दूर नहीं जब खुदा अत्याचारियों को इस दुनिया से मिटाएगा तो उन बेहिस व बेग़ैरतों को दुनिया से मिटाएगा तो उन बेहिस व बेग़ैरत बादशाहों की बिसातें भी उलट दी जाएंगी, बेशक उसके यहां न देर है न अंधेर है, बस ज़ालिमों को थोड़ी सी मोहलत है और हर चीज़ का वक़्त तय है।

सैय्यदना हुसैन रज़ि० का क़दम

रिवलाफ़त–ए–राशिदा की आत्मा की रक्षा हेतु था

"इतिहास का निरीक्षण हमारा मार्गदर्शन इस ओर करता है कि हज़रत हुसैन रज़ि० द्वारा उठाए गये क़दम का उद्देश्य "न्यायपूर्ण साम्राज्य" की स्थापना थी। यज़ीद की बुराई नबवी ख़िलाफ़त को कैसर व किसरा की ख़िलाफ़त से बदल रही थी। यह बुराई घर की चारदीवारियों में सीमित न रही थी बल्कि जनता के सामने खुल चुकी थी। उस समय इमाम हुसैन बिन अली रज़ि० के इज्तिहाद ने इस ओर मार्गदर्शन किया कि इस "अत्याचारी इमाम" के सामने सत्य का प्रदर्शन करना आवश्यक है और उन्होंने इस राह में अपनी जान दे दी।

अर्थात यह कि इमाम हुसैन के घर छोड़ने की बुनियाद यज़ीद की बुराई थी। उनके आन्दोलन का आधार न्यायपूर्ण साम्राज्य की स्थापना थी। अल्लाह न करे एक ग़ैर इस्लामी चीज़ यानि नस्ल की श्रेष्ठता के आधार पर ख़िलाफ़त के दावेदार न थे। जब आम सहाबा किराम रज़ि० का यह पक्ष सामने आ गया कि वे यज़ीद की बुराई के बावजूद उसके ख़िलाफ़ निकलने के क़ायल न थे। केवल इसलिए कि फ़ित्ने और फ़साद का ख़तरा था। आम सहाबा अपने इस इज्तिहाद के आधार पर हज़रत इमाम हुसैन रज़ि० का साथ तो न दे सके लेकिन इमाम हुसैन रज़ि० को ग़ैर इस्लामी आन्दोलन की दावत देने वाला और गुनहगार भी न कहा और आम सहाबा पर हज़रत हुसैन रज़ि० ने भी इल्ज़ाम नहीं लगाया इसलिए कि वे भी अपने इज्तिहाद पर अमल कर रहे थे। लेकिन अपनी दावत की सत्यता पर और अपने आन्दोलन की सच्चाई पर उन्हीं सहाबा को गवाह बनाते थे अमल में उनके इस क़दम में शामिल नहीं थे।

तात्पर्य यह कि हज़रत हुसैन बिन अली रज़ि० अपने इज्तिहाद पर कार्यरत रहकर यज़ीदियों से लड़ाई लड़ी और आम सहाबा ने फ़ित्ने और फ़साद का ध्यान रखते हुए इसमें नजात समझी कि यज़ीद की हिदायत के लिए दुआ की जाए। और उससे नजात और राहत की दुआ की जाए। हज़रत हुसैन रज़ि० समझ रहे थे कि आम सहाबा भी यज़ीद की बुराई से परिचित हैं और वे भी न्यायसंगत साम्राज्य की स्थापना को आवश्यक समझते हैं, लेकिन बनू उमैया की ताक़त के कारण से किसी नये आन्दोलन का सामने आना मुश्किल है और फिर मुसलमानों के बीच क़त्ल व ख़ून का अंदेशा है, इसलिए वे इस प्रकार के आन्दोलन के लिए तैयार नहीं। इसीलिए हज़रत हुसैन रज़ि० उन्हीं मदद न करने पर इल्ज़ाम ठहराने लायक़ भी न समझा और दूसरी ओर उन्हें अपनी दावत पर गवाह बनाते रहे। यहीं से यह बात भी साफ़ हो जाती है कि बहुत से सहाबा किराम रज़ि० ने हज़रत हुसैन रज़ि० को इस कदम के उठाने के लिए या कूफ़ा की ओर जाने के लिए रोका भी था। इसकी वजह यह न थी कि यज़ीद के किरदार में कोई ऐसी ख़ामी न थी कि सहाबा किराम यह समझ रहे थे हालात ऐसे नही हैं जिसमें यह आन्दोलन सफल हो सके।"

मौलाना क़ाज़ी मुजाहिदुल इस्लाम क़ासमी रह०

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

ISSUE:10 OCTOBER 2015 VOLUME: 07

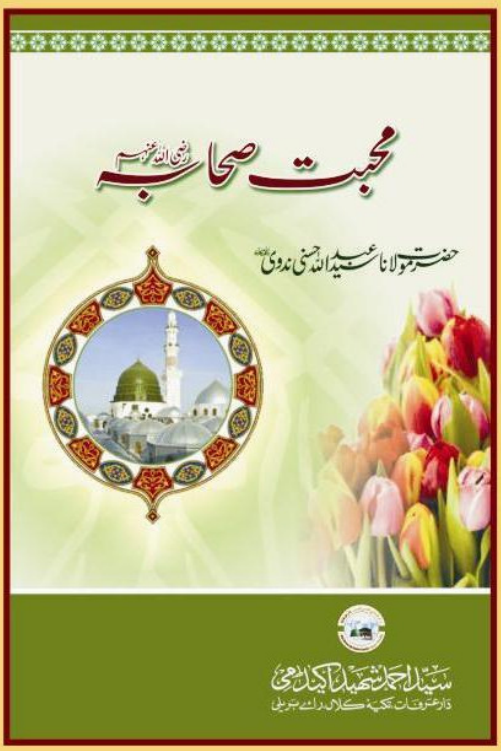

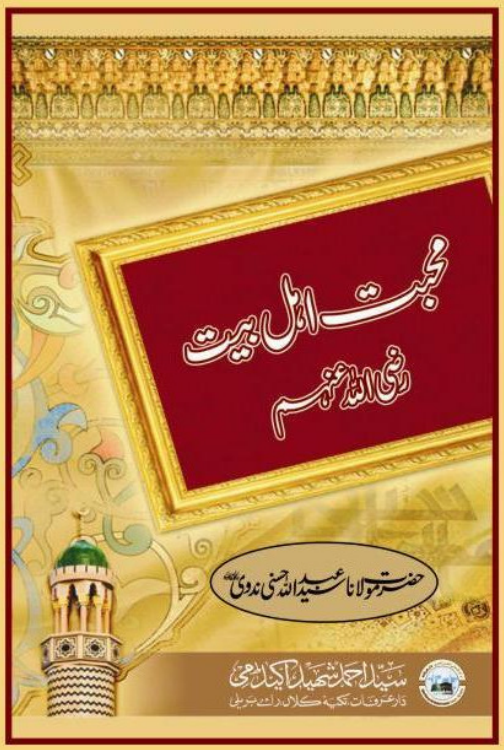

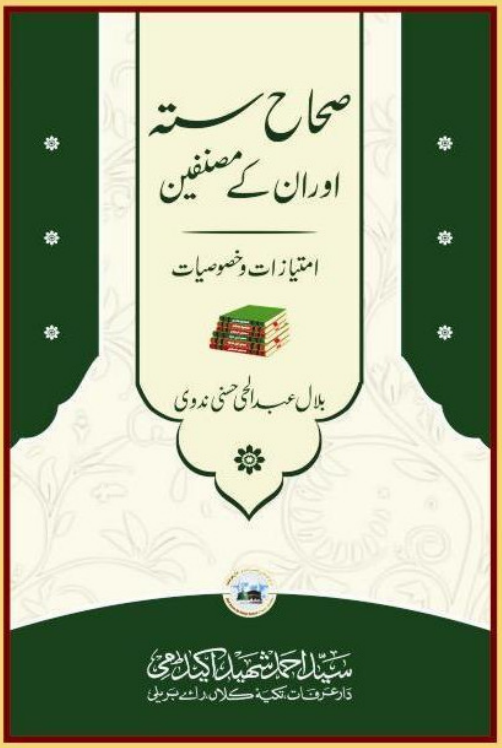

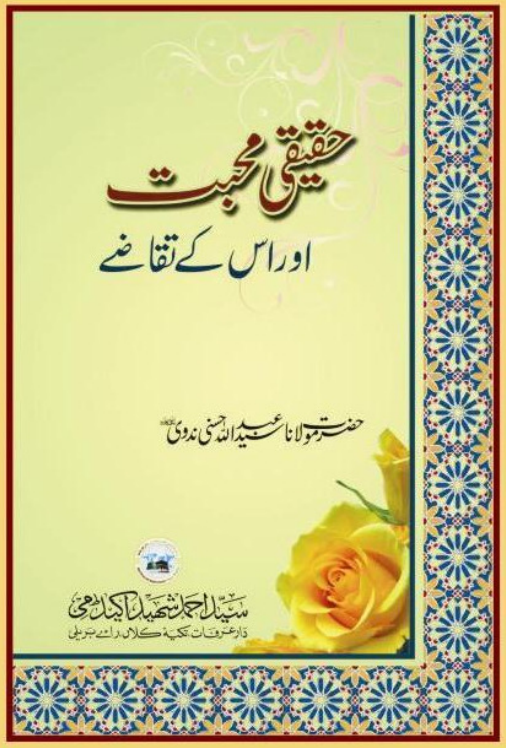

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9792646858
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.